तू है मशहूर दिल-आज़ार[1], यह क्या ?
तुझ पर आता है मुझे प्यार, यह क्या ?
जानता हूँ कि मेरी जान है तू
और मैं जान से बेज़ार[2], यह क्या ?
पाँव पर उनके गिरा मैं तो कहा
देख, हुशियार, ख़बरदार, यह क्या ?
तेरी आँखें तो बहुत अच्छी हैं
सब इन्हें कहते हैं बीमार, यह क्या ?
सर उड़ाते हैं वह तलवारों से
कोई कहता नहीं, सरकार यह क्या ?
ख़ूबियाँ कल तो बयां होती थीं
आज है शिकवये अग़यार[3], यह क्या ?
ले लिए हमने लिपट कर बोसे[4]
वह तो कहते रहे हरबार, यह क्या ?
बातें सुनिए तो फड़क जाइयेगा
गर्म हैं 'दाग़' के अशआर[5] यह क्या ?

:o:

जब जवानी का मज़ा जाता रहा,
जिन्दगानी का मज़ा जाता रहा।
वह क़सम खाते हैं अब हर बात पर,
बदगुमानी[6] का मज़ा जाता रहा।
दास्ताने-इश्क़[7] जब ठहरी ग़लत,
फिर कहानी का मज़ा जाता रहा।

---

१. दिल दुखाने वाला २. ऊबा हुआ ३. रक़ीबों (प्रतिद्वंद्वी प्रेमी) की शिकायत। ४. चुम्बन ५. शेर का बहुवचन ६. सन्देह ७. प्रेम कहानी।

ग़ैर पर लुत्फ़ो-करम[१] होने लगा,
मेहरबानी[२] का मज़ा जाता रहा।
नामाबर[३] ने तै किये सारे पयाम[४],
मुंहज़बानी का मज़ा जाता रहा।
'दाग़' ही के दम से था लुत्फ़े-सुख़न[५]
ख़ुश-बयानी[६] का मज़ा जाता रहा।

:०:

वह जाना फेर कर चितवन किसी का,
हमारे हाथ में दामन किसी का।
ज़माने के चलन सीखे हैं तूने
किसी का दोस्त है दुश्मन किसी का।
दिले-वीरां[७] को जब देखा तो बोले,
यह है उजड़ा हुआ मसकन[८] किसी का।
कहा ग़ुञ्चे[९] से मुरझाकर यह गुल[१०] ने,
हमेशा कब रहा जोबन[११] किसी का।
पड़ा था हाय किस कम्बख़्त के हाथ,
कि है निकला हुआ[१२] दामन किसी का।
मेरे मातम[१३] में वह आयें तो कहना,
करें ग़म आप के दुश्मन किसी का।
किसी का दम निकलता है किसी से,
किसी पर हाल है रौशन[१४] किसी का।
वह पहरों देखते हैं 'दाग़' के दाग़[१५]
किसी की सैर है, गुलशन किसी का।

---

१. कृपा २. हमारे ऊपर जो मेहरबानी थी ३. पत्रवाह
४. संदेश ५. काव्यानन्द ६. अच्छी कविता करने ७. उजड़ा हु
दिल ८. घर ९. कली १०. फूल ११. यौवन १२. फटा हु
१३. शोक प्रकट करना अर्थात् मेरे मरने के बाद १४. स्प
१५. वे दाग़ जो प्रेम की कठिनाइयों में हृदय पर पड़े हैं।

उनके घर 'दाग़' जा के देख लिया,
दिल के कहने में आ के देख लिया।
लोग कहते थे चुप लगी है तुझे,
हाले-दिल भी सुना के देख लिया।
जाओ भी क्या करोगे मेहरो-वफ़ा[1]
बारहा[2] आज़मा के देख लिया।
उनको ख़लवत-सरा[3] में बेपर्दा,
साफ़ मैदान पा के देख लिया।
तुम को है वस्ले[4]-ग़ैर[5] से इन्कार !
और जो हमने आ के देख लिया।
'दाग़' ने ख़ूब आशिक़ी का मज़ा,
जल के देखा, जला के देख लिया।

:o:

एक ही रंग है सब से यह तमाशा कैसा ?
कोई कैसा है कोई चाहने वाला कैसा ?
अरसए[6] हश्र[7] में इन्साफ़ हमारा कैसा ?
देखना यह है कि होता है तमाशा कैसा ?
नामाबर[8] तूने भी देखा है उसे सच कहना ?
गात कैसी है ? फबन कैसी है ? नक़्शा कैसा ?
ख़ूबियाँ लाख किसी में हों तो ज़ाहिर न करें
लोग करते हैं बुरी बात का चर्चा कैसा ?

---

१. प्रेम और वफ़ादारी २. कई बार ३. सोने का स्थान, जहाँ और कोई न हो ४. मिलन ५. रक़ीब अर्थात् प्रतिद्वन्द्वी ६. मैदान ७. इस्लाम के अनुसार जब यह दुनिया समाप्त होगी सब आत्माएँ एक जगह जमा होंगी तब इस जीवन में उन के किए हुए पाप और पुण्य सामने रखे जाएँगें और फ़ैसला होगा। इसी को क़यामत या महशर भी कहते हैं ८. पत्रवाहक ।

तेरे क़ुर्बान, कोई दम यही तकरार रहे
दिल हमारा है, हमारा है, तुम्हारा कैसा ?

क़ैसो[1]-फ़र्हाद[2] के क़िस्से तो सुना करते हो
दाद[3] दो इसकी कि हमने तुम्हें चाहा कैसा ?

तुम सलामत हो तो हर रोज़ क़ियामत होगी
हम भी देखेंगे तमाशे पे तमाशा कैसा ?

जांनिसारों[4] को न देखा यह बहाना रख कर
जान पर खेलनेवालों का तमाशा कैसा ?

ग़ैर का ज़िक्रे-वफ़ा और हमारे आगे
'दाग़' इस बात से जलता है कलेजा कैसा !

:o:

दिले पुर-इज़्तिराब[5] ने मारा
इसी ख़ाना ख़राब ने मारा।

देख लेना कि हश्र का मैदाँ
मेरे हाज़िरजवाब[6] ने मारा।

याद करते हो ग़ैर के अशआर[7]
हाय इस इन्तिख़ाब[8] ने मारा।

दिल लगावट ने कर दिया बिस्मिल[9]
और फिर इज्तिनाब[10] ने मारा।

थक गये हाथ लिखते-लिखते ख़त
इस सवालो-जवाब ने मारा।

मुझ को बेताब देख कर बोले
आप के इज़्तिराब ने मारा।

---

१. मजनूँ, अरब का प्रसिद्ध आशिक़ २. ईरान का प्रसिद्ध प्रेमी, जिस की प्रेमिका शीरीं थी ३. प्रशंसा ४. जीवन निछावर करने वाले ५. व्याकुल ६. माशूक़ ७. शेर का बहुवचन ८. चुनाव ९. घायल १०. बेरुख़ी।

देख कर जलवा ग़श हुए मूसा[१]
'दाग़' मुझको हिजाब[२] ने मारा।

:o:

गर सिलसिलाए नामाओ-पैग़ाम निकलता,
तो ऐ दिले-नाकाम बड़ा काम निकलता।

होता है हसीनों का यही वक़्ते-नुमाइश,
वर्ना मह्-कामिल[३] न सरे-शाम निकलता।

दुश्मन[४] की निदामत[५] ने उन्हें प्यार दिलाया,
ऐ काश मेरे जिम्मे भी इल्ज़ाम निकलता।

पैग़ाम्बर उस शोख़ को ला, या मुझे ले चल,
खाली तेरी बातों से नहीं काम निकलता।

ऐ 'दाग़' सुनाते ग़ज़ल उस शोख़ को हम भी,
गर शेर कोई क़ाबिले-इनआम निकलता।

:o:

वह अपना दस्ते-हिनाई[६] भी रखते डरते हैं,
इलाज कौन करे मेरे दिल के छालों का।

हर एक मारे[७]-स्याह ज़ुल्फ़ो[८] गेसुओ[९]-काकुल[१०]
तुम्हारे बाल हैं या खेत है यह कालों का।

वह फ़ूलवालों का मेला[११] वह सैर याद है 'दाग़',
वह रोज़ झरने पै जमघट परी-जमालों[१२] का।

:o:

---

१. यहूदी धर्म के एक महापुरुष, जिन्हें 'तूर' पहाड़ पर भगवान् के दर्शन हुए और वह देखते ही बेहोश हो गये २. पर्दा, यह कलकत्ते की मुन्नी बाई का तखल्लुस भी था। ३. पूरा चाँद ४. अर्थात् रक़ीब ५. पछतावा ६. मेंहदी से रँगे हुए हाथ ७. काला साँप ८. कानों के ऊपर से लटकते हुये बाल ९. पीछे की तरफ़ लहराने वाली बाल की लटें १०. कनपट्टी और उसके नीचे के बाल ११. दिल्ली का एक प्रसिद्ध मेला १२. अति सुन्दर स्त्रियों।

कहो जब तुम यह है बीमार मेरा
तो क्यों कर दूर हो आज़ार[1] मेरा ?
पयामे-शौक़ भी क़ासिद अदा[2] हो
न आये नाम भी ज़िन्हार[3] मेरा।
बुराई में भी होगा कोई मतलब
वह करते ज़िक्र क्यों बेकार मेरा।
मुझे कोसें बला से, गालियाँ दें
मगर वह नाम लें हर बार मेरा।
कहूँगा हश्र में यह कौन है कौन
मज़ा दे जायेगा इन्कार मेरा।
क़यामत है सुनें वह सर झुकाये
ख़ुदा के सामने इज़हार[4] मेरा।
मुझे तुम जानते हो 'दाग़' हूँ मैं
कहीं जाता है ख़ाली वार मेरा!

:o:

बला से जो दुश्मन हुआ है किसी का
वह काफ़िर[5] सनम क्या ख़ुदा है किसी का ?
दुआ माँग लो तुम भी अपनी ज़बां से
कि पूरा हो जो मुद्दआ[6] है किसी का।
इधर आ कलेजे से तुझको लगा लूँ
तुझी पर तो दिल आ गया है किसी का।
तुम्हें इससे क्या बहस क्यों पूछते हो
कोई तज़किरा हो रहा है किसी का।
मेरी बज़्म में आके वह पूछते हैं
बुरा हाल हमने सुना है किसी का।

---

१. बीमारी, कष्ट, अर्थात् प्रेम २. काम हो जाना ३. हरगिज़
४. बयान ५. अर्थात् माशूक़ ६. इच्छा, अरमान।

सितम ही किये जाओ हम भी हैं हाज़िर
हमें हौसिला देखना है किसी का।
मेरी इल्तिजा पर बिगड़ कर वह बोले
नहीं मानते इसमें क्या है किसी का।
वह करने लगे हैं क़यामत की बातें
यह सच है तो बस फ़ैसला है किसी का।
सुना करते हैं छेड़ कर गालियाँ हम
वगरना कोई सर फिरा है किसी का ?
बज़ाहिर न जाने न जाने न जाने
तुझे 'दाग़' दिल जानता है किसी का।

:o:

गुज़र गये हैं जो दिन फिर न आएँगे हरगिज़
कि एक चाल फ़लक[१] हर बरस नहीं चलता।
मिले जो 'दाग़' तो कैसा बनाएँ ठीक उसे
हज़ार कोस से कुछ उनका बस नहीं चलता।

:o:

एक ही शिकवे[२] में सामां वस्ल का बरहम[३] हुआ
क्या हँसी में रंज फैला किस खुशी में ग़म हुआ।
सुब्हे-हिजराँ[४] में इधर ग़मगीं उधर उन का यह हाल
आइने से कहते हैं यह क्या मेरा आलम हुआ।
'दाग़' फिर उस आफ़ते-जाँ से बढ़ाई रस्मो-राह
पहले थोड़ा रंज पाया ! पहले थोड़ा ग़म हुआ !

:o:

---

१. आकाश २. शिकायत ३. गड़बड़ ४. विरह की सुबह ५. हालत।

तू ही अपने हाथ से जब दिलरुबा[१] जाता रहा
दिल की भी परवा नहीं जाता रहा जाता रहा।

जिस तवक़्क़ो[२] पर थी अपनी ज़िन्दगी वह मिट गई
जो भरोसा था हमें वह आसरा जाता रहा।

मर्गे[३]-दुश्मन का ज़्यादा तुमसे है मुझको मलाल[४]
दुश्मनी का लुत्फ़, शिकवों का मज़ा जाता रहा।

अच्छी सूरत की रहा करती थी अक्सर ताक-झाँक
रह गईं आँखें मगर वह देखना जाता रहा।

अब कई दिन से वह रस्मो-राह भी मौक़ूफ़ है
वरना बरसों नामाबर आता रहा जाता रहा।

'दाग़' कुछ दिरहम[५] न था जिसका उन्हें होता ख़याल
हो गया गुम हो गया, जाता रहा जाता रहा।

:o:

अच्छी सूरत पे ग़ज़ब टूट के आना दिल का
याद आता है हमें हाय ज़माना दिल का।

तुम भी मुँह चूम लो बेसाख़्ता[६] प्यार आ जाए
मैं सुनाऊँ जो कभी दिल से फ़साना दिल का।

इन हसीनों का लड़कपन ही रहे, या अल्लाह!
होश आता है तो आता है सताना दिल का।

मेरी आग़ोश[७] से क्या ही वह तड़प कर निकले
उनका जाना था इलाही कि यह जाना दिल का।

बेदिली का जो कहा हाल तो फ़र्माते हैं
कर लिया तू ने कहीं और ठिकाना दिल का।

बाद मुद्दत के यह ऐ 'दाग़' समझ में आया
वही दाना[८] है कहा जिसने न माना दिल का।

:o:

---

१. दिल लेनेवाला २. आशा ३. मृत्यु ४. शोक ५. छोटा सिक्का ६. आप ही आप, अचानक। ७. गोद ८. बुद्धिमान

सबब खुला[1] यह हमें उनके मुँह छिपाने का
उड़ा न ले कोई अन्दाज़ मुस्कराने का।
चढ़ाओ फूल मेरी क़ब्र पर जो आए हो
कि अब ज़माना गया तेवरियाँ चढ़ाने का।
बतंग आके जो की मैंने तर्क[2] रस्मे-वफ़ा
हर एक से कहते हैं यह हाल है ज़माने का।
जफ़ाएँ करते हैं थम-थम के इस ख़याल से वह
गया तो फिर यह नहीं मेरे हाथ आने का।
समायें अपनी निगाहों में ऐसे वैसे क्या
रक़ीब ही सही हो आदमी ठिकाने का।
ख़ता मुआफ़! तुम ऐ 'दाग़' और ख़ाहिशे-वस्ल[3]
क़ुसूर है यह फ़क़त[4] उनके मुँह लगाने का।

:०:

दो दिन भी किसी से वह बराबर नहीं मिलता
यह और क़यामत है कि मिल कर नहीं मिलता।
क्या पूछते हो बज़्म[5] में क्या ढूँढ़ रहे हो
लो साफ़ बता दूँ दिले-मुज़तर[6] नहीं मिलता।
क्यों कर न मरे मौत पे बीमारे-मुहब्बत
ऐसा यह मज़ा है कि मुकर्रर[7] नहीं मिलता।
क्या ईद के दिन भी रमज़ां[8] है कि जो साक़ी
मुझको नहीं मिलता, कोई साग़र[9] नहीं मिलता।
महफ़िल में तेरी ईद के दिन मेरे गले से
वह कौन-सा फ़ित्ना[10] है जो उठ कर नहीं मिलता।

---

१. कारण मालूम हुआ २. प्रेम का नाता तोड़ना ३. मिलन की इच्छा ४. सिर्फ़ ५. महफ़िल, ६. बेचैन दिल ७. दोबारा ८. रोज़ा ९. शराब का प्याला १०. लड़ाई, झगड़ा।

परवाने[१] का भी वक़्त है, बुलबुल का भी मौसम
मरता हूँ जो माशूक़ घड़ी भर नहीं मिलता।
हर वक़्त पढ़े जाते हैं क्यों 'दाग़' के अशआर[२]
क्या तुमको कोई और सुख़नवर[३] नहीं मिलता।

:o:

जाओ हाँ जाओ हुई सुब्ह-शबे-वस्ल नुमूद[४]
सिलसिला नामा-ओ-पैग़ाम का जारी रखना।
चमने-कूचए-जानां[५] से मेरी तुर्बत पर
ला के दो फूल भी ऐ बादे-बहारी[६] रखना।
ज़ेब[७] देती हैं यह मस्ताना अदायें क्या क्या
बे-पिये भी तुझे आँखों को ख़ुमारी[८] रखना।

:o:

ग़म उस पर आशकार[९] किया हमने क्या किया
ग़ाफ़िल को होशियार किया हमने क्या किया।
वादे पर इन्तज़ार किया हमने क्या किया
झूठे का ऐतबार किया हमने क्या किया।
हाँ हाँ तड़प-तड़प के गुज़ारी तुम्हीं ने रात
तुमने ही इन्तज़ार किया, हमने क्या किया।
नासेह भी है रक़ीब यह मालूम ही न था
किसको सलाहकार किया हमने क्या किया।
पहले तो मुन्फ़इल[१०] वह हुए फिर बिगड़ गए
क्यों शिकवा बार-बार किया हमने क्या किया।
कह देंगे हम तो दावरे-महशर[११] से साफ़ साफ़
अच्छों को दिल ने प्यार किया हमने क्या किया।

---

१. पतंगा २. पद्यांश ३. कवि ४. प्रकट होना ५. प्रेमिका की गली रूपी वाटिका ६. वासन्ती समीर ७. सजना, अच्छी लगना ८. नशीली ९. प्रकट १०. पछताये ११. ख़ुदा।

आईना करके साफ़ दिल अपना दिखा दिया
क्यों उनको शर्मसार किया हमने क्या किया।
रुस्वा किया जो दिल ने तो अब कह रहे हैं 'दाग़'
दुश्मन को राज़दार[१] किया हमने क्या किया।

:o:

ग़रज किस को करे मातम हमारा
मुबारक हो हमीं को ग़म हमारा।
ख़ुदा ही कुछ सँभाले तो यह सँभले
मिज़ाज अब हो गया बरहम[२] हमारा।
लड़ा रक्खी है जान ऐसी जफ़ा पर
कोई देखे ज़रा दम-ख़म[३] हमारा।
ख़ुशी ने बज़्म में क्या रंग बदला
कि तुमसे बढ़ के है आलम हमारा।
तेरे आलम को जब से हमने देखा
तमाशाई है एक आलम हमारा।
फिर इतना भी नहीं ऐ 'दाग़' कोई
ग़नीमत है जहाँ में दम हमारा।

:o:

न किया वादा रात का पूरा
तू नहीं अपनी बात का पूरा।
नीम-जाँ[४] रह न जाऊँ ऐ क़ातिल!
वार कर अपने हाथ का पूरा।

:o:

रूए-अनवर[५] नहीं देखा जाता।
देखें क्यों कर, नहीं देखा जाता।
क्या रहें हम कि तेरा चाल-चलन
पास रह कर नहीं देखा जाता।

---

१. अपने भेद का जानकार २. बिगड़ ३. अकड़ ४. अधमरा
५. चमकता मुख।

रश्के-दुश्मन भी गवारा लेकिन
तुझको मुज़्तर[1] नहीं देखा जाता।
तौबा के बाद भी ख़ाली ख़ाली
कोई साग़र नहीं देखा जाता।
क्या शबे-वादा हुआ हूँ बेख़ुद
जानिबे दर नहीं देखा जाता।
बारहा देख लिया है उसको
और अक्सर नहीं देखा जाता।
हम जहाँ हैं वहीं देखेंगे तुझे
हमसे घर घर नहीं देखा जाता।
अब यह नौबत है कि मेरा सदमा
उनसे दम भर नहीं देखा जाता।
ख़त मेरा फेंक दिया यह कहकर
मुझसे दफ़्तर नहीं देखा जाता।
मुख़्तसर[2] यह है कि अब 'दाग़' का हाल
बन्दा-पर्वर नहीं देखा जाता।

:o:

कुछ हमें भी ख़याल हो ही गया
आख़िर उनसे मलाल[3] हो ही गया।
न कहा था कि सच न कहवाओ
आपको इन्फ़ेहाल[4] हो ही गया।
रंग लाया है इश्क़ आख़िरकार
एक दोनों का हाल हो ही गया।
दिल्लगी का भी है बुरा अंजाम[5]
कि हँसी में मलाल हो ही गया।

---

१. बेचैन २. संक्षिप्त में ३. दुःख ४. पछतावा ५. परिणाम।

गो[1] किया ज़ब्त ज़िक्रे-दुश्मन पर
रुख़[2] से ज़ाहिर मलाल हो ही गया।
गो बुराई से हो मगर आख़िर
उन को मेरा ख़याल हो ही गया।

:o:

अब दिल है मक़ाम[3] बेकसी का
यूँ घर न तबाह हो किसी का।
रोना है अब उस हँसी ख़ुशी का
मातम है बहारे ज़िन्दगी का।
किस-किस को मज़ा है आशिक़ी का
तुम नाम तो लो भला किसी का।
गुलशन में तेरे लबों ने गोया[4]
रस चूस लिया कली-कली का।
तेरा भी तो हुस्न है दग़ाबाज़
होता ही नहीं कोई किसी का।
लेते नहीं बज़्म में मेरा नाम
कहते हैं ख़याल है किसी का।
जीते हैं किसी की आस पर हम
एहसान है ऐसी ज़िन्दगी का।
बनती है बुरी कभी जो दिल पर
कहता हूँ बुरा हो आशिक़ी का।
इतनी ही तो बस कसर है तुम में
कहना नहीं मानते किसी का।
हम बज़्म में उनकी चुपके बैठे
मुँह देखते हैं हर आदमी का।

१. चाहे २. चेहरे ३. जगह ४. जैसे।

जब ऐसी वफ़ा पे यह जफ़ा हो
जी छूट न जाए आदमी का।
जो दम है वह है बसा[1] ग़नीमत
सारा सौदा है जीते जी का।
आग़ाज़[2] को कौन पूछता है
अंजाम[3] अच्छा हो आदमी का।
कहते हैं उसे ज़बाने - उर्दू
जिसमें न हो रंग फ़ारसी का।
ऐसे से जो 'दाग़' ने निबाही
सच है कि यह काम था उसी का।

:o:

ज़ुल्म किस-किस ग़रीब पर न किया
तुमने इस काम से हज़र[4] न किया।
दिल के हाथों है सख़्त मजबूरी
अब किया वह जो उम्र भर न किया।
इश्क़ ने क़ैद कर लिया मुझ को,
क़ब्ज़ा उनके मिज़ाज पर न किया।
कोई दिन और सब्र करना था
दिले-बेताब ने मगर न किया।
तुमको हम बावफ़ा तो कह देंगे
'दाग़' ने एतबार गर न किया।

:o:

जहाँ तेरे जलवे से मामूर[5] निकला
पड़ी आँख जिस कोह पर तूर[6] निकला।

---

१. बहुत २. आरम्भ ३. अन्त ४. त्याग ५. सम्पूर्ण ६. तूर पहाड़, जिस पर हज़रत मूसा को अल्लाह का जलवा दिखायी दिया था।

न निकला कोई बात का अपनी पूरा
मगर एक निकला तो मन्सूर[१] निकला।
वह मैकश हूँ रस चूस लेता हूँ उसका
जहाँ शाख़ में कोई अंगूर निकला।
वुजूद[२]-ओ-अदम[३] दोनों घर पास निकले
न यह दूर निकला न वह दूर निकला।
कहाँ रह के तौबा निबाहूँ इलाही!
कि जन्नत में भी मजमा-ए-हूर निकला।
हुआ था कभी सर-क़लम[४] क़ासिदों का?
यह तेरे ज़माने में दस्तूर निकला।
शबे-वस्ल-ज़िक्रे अदू[५] पर वह बोले
ख़ुदा के लिए क्यों यह मज़कूर[६] निकला।
समझते थे हम 'दाग़' गुमनाम होगा
मगर वह तो आलम[७] में मशहूर निकला।

:o:

जाता रहा मिलाप तो दोनों को ग़म हुआ
इतना हुआ कि मुझको सिवा[८] उसको कम हुआ।
अफसोस है रक़ीब ने की आप से दग़ा
मुझको भी रंज आप के सर की क़सम हुआ।
क्या दिल धड़क रहा है नवीदे-विसाल[९] से
जिसको ख़ुशी हुई उसे आख़िर को ग़म हुआ।
ऐ 'दाग़' शुक्र कर न रही उनसे रस्मो-राह
तुझ पर ख़ुदा का फ़ज़्ल[१०] ख़ुदा का करम हुआ।

:o:

---

१. एक प्रसिद्ध सूफ़ी जिन्हें इस लिये फाँसी दे दी गई थी कि वह अपने को भगवान् कहने लगे थे। २. होना ३. न होना। ४. काट डाला गया ५. प्रतिद्वन्द्वी की चर्चा ६. जिसकी चर्चा हो ७. संसार ८. अधिक ९. मिलने की शुभ सूचना १०. कृपा, दया।

इस जफ़ा का जभी मज़ा मिलता
कोई तुझको अगर बुरा मिलता।
ग़ैर से मिल के क्या लिया तुम ने
हमसे मिलते तो कुछ मज़ा मिलता।
आशिक़ी से मिलेगा ऐ ज़ाहिद[1]!
बन्दगी से नहीं ख़ुदा मिलता।
नामाबर डर से भाग आया है
या न मिलता जवाब या मिलता।
एक न एक हम लगाये रखते हैं
तुम न मिलते तो दूसरा मिलता।
दोस्तों से तो कुछ न निकला काम
कोई दुश्मन ही काम का मिलता।
रोज़ एक दिल्लगी नयी होती
रोज़ एक दिल मुझे नया मिलता।
तुमको यह मिल गया है क़िस्मत से
'दाग़' सा वर्ना दूसरा मिलता?

:o:

हसीनों की वफ़ा कैसी जफ़ा क्या
जो दिल आया तो फिर अच्छा बुरा क्या?
बुरा कहने से कहिये मुद्दआ[2] क्या?
यह सुन कर चुप रहेगा दूसरा क्या?
निगाहे-नाज़ से देखें वह फिर क्यों?
मुकर्रर जो अदा हो वह अदा क्या?
मेरी सोहबत से क्यों बचते हैं अहबाब[3]
इलाही जीते जी मैं मर गया क्या?

---

१. रोज़ा एवं नमाज़ का पाबन्द व्यक्ति २. अभिप्राय ३. मित्र।

कभी तड़पा के दिल पर हाथ रखना
कभी कहना इसे यह हो गया क्या ?
कहा जालिम ने सुन कर 'दाग़' का हाल
बहुत अच्छे हैं उन का पूछना क्या ?

:o:

काश ! तू गोरे-ग़रीबाँ[१] पे न मुज़तर[२] फिरता
सब्र से, नाज़[३] से, तमकीं से, ठहर कर फिरता ।
जोश पर और क़यामत की जवानी आती
हाथ मेरा जो तेरे सीने पे अक्सर फिरता ।
लुत्फ़ था मैं भी शबे-वस्ल कहीं छुप जाता
आदमी उनका मेरी टोह में घर-घर फिरता ।
यह न कहिये कि नहीं अहले-वफ़ा में कोई
नाम एक शख़्स का है मेरी ज़बाँ पर फिरता ।
तुम न आते तो यह अन्दाज़ कहाँ से होते
बैठता बज़्म में बन कर कोई तन कर फिरता ।
क्या मेरे हाथ में कल थी जो फिराता उस को
पन्दगो[४] दिल किसी महबूब से क्यों कर फिरता ।

:o:

ग़ैर का मैं भी अगर चाहनेवाला होता
ढंग इस चाह का दुनिया से निराला होता ।
सुनके अल्लाह की तारीफ़ कहा उस बुत[५] ने
तूने हम में तो कोई ऐब निकाला होता ।
हम सुनाते जो कोई दर्द हमारा सुनता
दिल दिखाते जो कोई देखनेवाला होता ।
नामाबर देख के तेवर उन्हें ख़त देना था
बातों-बातों में फ़क़त[६] काम निकाला होता ।

---

१. भाग्यहीन की कब्र २. बेचैन ३. नखरा ४. उपदेशक
५. माशूक़ ६. केवल ।

दर्दे-फ़ुर्क़त[१] की खटक वस्ल[२] में क्या मिट जाती
आह थमती अगर ऐ 'दाग़' तो नाला होता।

:o:

बुरा है शाद[३] को नाशाद करना
समझ कर सोच कर बेदाद करना।
नहीं आता हमें बर्बाद करना
यह फिर कहना यह फिर इर्शाद करना[४]।
अदू के ग़म में यूँ फ़रियाद हर वक़्त
भुला दूँगा तुझे मैं याद करना।
छिपाना राज़े-वस्ल अहबाब से 'दाग़
फिर अरमाने-मुबारकबाद[५] करना।

:o:

ग़र्बत में पूछ लेते हैं बादे-सबा[६] से हम
रहता है ज़िक्रे-ख़ैर[७] हमारा वतन में क्या।
अर्ज़े-विसाल पर यह दो-हर्फ़ी[८] जवाब है
हर एक सुख़न में क्यों कभी हर एक सुख़न में क्या।
सुन-सुन के मेरी शोख़िए-तक़रीर यूँ कहा
तौबा है वह ज़बान रहेगी दहन[९] में क्या।
ऐ 'दाग़' क़दरदाने-सुख़न[१०] अब वहीं तो हैं
तारीफ़ इस ग़ज़ल की न होगी दकन में क्या।

:o:

तौबा-तौबा सरे तस्लीम झुकाया जाता
हम जो समझे थे अगर तुझमें न पाया होता।
मैं किसी दिन जो इनायत[११] से बुलाया जाता।
पेशतर[१२] मुझसे मुझे छोड़ के साया जाता।

---

१. जुदाई की पीड़ा २. मिलन ३. खुश ४. आज्ञा देना ५. बधाई की कामना ६. सुबह की हवा ७. अच्छी चर्चा ८. दो शब्दों का उत्तर ९. मुँह १०. काव्य-प्रशंसक ११. कृपा १२. इसके पूर्व।

ऐ नज़ाकत तेरे क़ुर्बान कि वक़्ते-रुख़सत[1]
वह कहें हम से तो घर तक नहीं जाया जाता।
वह ख़रीदार ही दिल के न हुए क्या कीजे,
हम भी कुछ दबते कुछ उनको भी दबाया जाता।
उनकी महफ़िल में रक़ीबों ने कसे आवाज़े
बोलता मैं तो गला मेरा दबाया जाता।
उठ के काबे से न जाता जो सनमख़ाने[2] को
और फिर 'दाग़' कहाँ बारे-ख़ुदाया जाता।

:o:

दिल को ताका तो मेरी जान जिगर छोड़ दिया
इस तरफ़ भी न कोई तीरे-नज़र छोड़ दिया।
क्या नज़ाकत की शिकायत है ग़नीमत जानो
हमने लिपटा के गले वक़्ते-सहर[3] छोड़ दिया।
ग़ैर के हाल से मतलब जो हमारा निकला
उसने वह ज़िक्र जो था आठ पहर छोड़ दिया।
नामाबर ज़िन्दा न छुटता कभी उससे लेकिन
पढ़ के ख़त, सोच के कुछ, सुन के ख़बर छोड़ दिया।
आप फँस जायेंगे हम आप तकल्लुफ़ न करें
यह तो फ़रमाइए दो दिन में अगर छोड़ दिया।
'दाग़' वारफ़्ता-तबीयत[4] का ठिकाना क्या है
ख़ाना-बर्बाद ने मुद्दत हुई घर छोड़ दिया।

:o:

ले चला जान मेरी रूठ के जाना तेरा
ऐसे आने से तो बेहतर था न आना तेरा।

---

१. विदाई के समय २. मन्दिर ३. भोर-वेला ४. जिसे अपनी कुछ होश न हो।

अपने दिल को भी बताऊँ न ठिकाना तेरा
सब ने जाना जो पता एक ने जाना तेरा।

आरज़ू ही न रही सुबहे-वतन की मुझ को
शामे-ग़ुर्बत[१] है अजब वक़्त सुहाना तेरा।

ऐ दिले-शेफ़्ता में आग लगाने वाले
रंग लाया है यह लाखे[२] का जमाना तेरा।

अपनी आँखों में अभी कौंद गई बिजली-सी
हम न समझे कि यह आना है कि जाना तेरा

'दाग़' को यूँ वह मिटाते हैं, यह फ़र्माते हैं
तू बदल डाल हुआ नाम पुराना तेरा।

:o:

'दाग़' हर एक जबाँ पर हो फ़साना तेरा
वह दिन आते हैं वह आता है जमाना तेरा।
बुलहविस[३] को भी हुआ नक़्दे-मुहब्बत पे ग़ुरू
या इलाही कोई लुटता है ख़ज़ाना तेरा।

मौत से वह ही दमे-नज़ा[४] बहाना कर लूँ
याद आ जाये मुझे काश बहाना तेरा।
तू ने मारा नहीं आशिक़ को मगर यह तो बता
नाम लेता है मेरी जान जमाना तेरा।

सिफ़्ते-हुस्न[५] करे कोई किसी पर्दे में
बोल उठता है मेरी जान फ़साना तेरा।
इस सलीके की अदावत कहीं देखी न सुनी
तू जमाने का अदू[६] दोस्त जमाना तेरा

---

१. परदेस की शाम २. होंठों पर पान की लाली ३. काम
४. दम निकलने के समय ५. सौंदर्य की प्रशंसा ६. दुश्मन।

क़त्ले-उश्शाक़[1] किया खेल समझ कर तूने
अभी बाक़ी है लड़कपन का ज़माना तेरा।
मुद्दई[2] देख हमें चश्मे-हिक़ारत[3] से न देख
कल हमारा था जो है आज ज़माना तेरा।
वादाए-हश्र पे बेसाख़्ता दिल लोट गया
अह्द[4] का अह्द बहाने का बहाना तेरा।

:o:

क़िस्मत[5] उसकी है कि जिस ने उसे पाया तनहा[6]
ख़ाब[7] में भी तो मेरे डर से न आया तनहा।
हुस्न बेपर्दा हुआ अंजुमन-आरा[8] हो कर
उस ने हम को न कभी जलवा दिखाया तनहा।
साथ ला कर वह रक़ीबों को यह फ़र्माते हैं
क्या सबब था जो मुझे तूने बुलाया तनहा ?
ख़िल्वते-नाज़[9] के तुमने भी उड़ाए हैं मज़े
हम ने भी लुत्फ़[10] तसव्वुर[11] का उठाया तनहा।
राज़दारों को, रफ़ीक़ों[12] को ख़बर करनी थी
'दाग़' तुम ने तो वहा रंग जमाया तनहा।

:o:

ऐश-ओ-इशरत में उधर है तो मुसीबत में इधर
एक हो कर कभी उनका है कभी दिल अपना।
दीन-ओ-दुनिया से गये, तुम से गये, जी से गये
आज यूँ कूच हुआ है कई मंज़िल अपना।
ख़ाक में उसको मिलायेंगे न देंगे हर्गिज़
आप का इस में इजारा[13] तो नहीं दिल अपना।

---

१. आशिक़ों की हत्या २. वादी ३. तुच्छ अथवा घृणा-दृष्टि से ४. वादा ५. भाग्य ६. अकेला ७. स्वप्न ८. सभा में बैठ कर ९. प्रेमी के साथ एकान्त में आनन्द लेना १०. आनन्द ११. कल्पना १२. हितचिन्तकों १३. जबरदस्ती।

हैदराबाद ने की क़द्र हमारी ऐ दाग़!
शाद आबाद रहे ख़ुसरवे[१] आदिल अपना

:०:

ज़मीं से क़दम अर्श[२] पर ले गया
फ़रिश्तों से बाज़ी बशर[३] ले गया।
मेरा दिल वह तीरे-नज़र ले गया
जिगर लेने वाला जिगर ले गया।
कहूँ क्या किधर से किधर ले गया
जिधर ले गया राहबर ले गया।
वह फिर मुझ से दिल हीलागर[४] ले गया
उधर दे गया था इधर ले गया।
छिपाया बहुत हमने पहलू में दिल को
कोई लेने वाला मगर ले गया।
रक़ीबों के हाथों से महशर के दिन
तुम्हें छीन कर मैं अगर ले गया?
शिकायत सुनी आज क्या क्या तेरी
कि दुश्मन मुझे अपने घर ले गया।
यह क्या ऐसी वहशत[५] हुई 'दाग़' को
उठा कर कहाँ घर का घर ले गया।

:०:

जवाब इस तरफ़ से भी फ़िलफ़ौर[६] होगा
दबे आप से वह कोई और होगा।
तग़ाफ़ुल[७] से बढ़कर भी क्या जौर[८] होगा
सितम हो चुका या अभी और होगा?
न आशिक़ को शिकवा न माशूक़ सरकश
इलाही वह क्या अहद क्या दौर[९] होगा?

---

१. न्यायप्रिय बादशाह २. आकाश ३. इन्सान ४. बहानेबाज़ ५. पागलपन ६. तुरन्त ७. बेपरवाही ८. अत्याचार ९. समय, काल

खुदा जाने किस दिन वह देखेंगे आ कर
मेरा हाल कब क़ाबिले-ग़ौर[1] होगा ?
यूँ ही गर हसीनों की आमद रहेगी
दकन रश्के कशमीर-ओ-लाहौर होगा ।
अयादत[2] को वह 'दाग़' की खुश-खुश आये
यह जाना कि अब तौर-बेतौर होगा ।

:o:

वह इस अदा से वहाँ जा के शर्मसार[3] आया
रक़ीब पर मुझे बेइख़्तियार[4] प्यार आया ।
यह मुझ से कहने को ज़ालिम सरे-मज़ार[5] आया
मेरे बग़ैर तुझे किस तरह करार[6] आया ?
कहीं पता न मिला सख़्त सोगवार[7] आया
गली गली दिले-गुमगश्ता[8] को पुकार आया ।
यह हाल था शबे-वादा कि ताबा[9] राह गुज़र[10]
हज़ार बार गया मैं हज़ार बार आया ।
वह बोले सच, तो न आया कभी यक़ीं मुझको
दरोग़[11] वादा किया और एतबार आया ।
जो वजह देर की पूछी, कहा यह क़ासिद ने
गुज़ारने थे मुसीबत के दिन गुज़ार आया ।
ख़ुदा के वास्ते झूठी न खाइये क़स्में
मुझे यक़ीन हुआ, मुझको एतबार आया ।
डरे जो हश्र में वह, मुझ को देखते ही कहा
मेरा रफ़ीक़[12] मेरा 'दाग़' जांनिसार[13] आया ।

:o:

---

१. ध्यान देने योग्य २. बीमार का हाल पूछने आना । ३. शर्मिन्दा ४. बरबस ५. कब्र के पास ६. चैन, आराम ७. शोकातुर ८. खोया हुआ दिल ९. तक १०. रास्ता ११. झूठा १२. हितैषी, मित्र १३. जान तक न्योछावर करने वाला ।

भूला मुझे तो भूल गया अपना घर भी क्या ?
जंगल में जाके खेत रहा[1] नामाबर भी क्या ?
लिल्लाह[2] मुझ से आँख चुराया न कीजिये
मिलती नहीं है दिल की तरह से नज़र भी क्या ?
मिलते नहीं वहाँ तो यहाँ ढूँढ लेंगे हम
वह छोड़ देंगे घर की तरह रह-गुज़र भी क्या ?
क्यों 'दाग़' के सवाल से चुप लग गई तुम्हें
आता नहीं जवाब समझ सोच कर भी क्या ?

:o:

तुम्हारे ख़त में नया एक सलाम किस का था ?
न था रक़ीब[3] तो आख़िर वह नाम किसका था ?
वह क़त्ल करके मुझे हर किसी से पूछते हैं
यह काम किसने किया है यह काम किस का था ?
वफ़ा करेंगे, निबाहेंगे, बात मानेंगे
तुम्हें भी याद है कुछ यह कलाम[4] किस का था ?
न पूछ गूछ थी किसी की वहाँ न आओ-भगत
तुम्हारी बज़्म[5] में कल एहतिमाम[6] किस का था ?
तमाम बज़्म जिसे सुन के रह गई मुश्ताक़[7]
कहो वह तज़्किरा-ए-नातमाम[8] किस का था ?
गुज़र गया वह ज़माना कहूँ तो किस से कहूँ ?
ख़याल दिल को मेरे सुब्ह-ओ-शाम किस का था ?
हर एक से कहते हैं क्या 'दाग़' बेवफ़ा निकला
यह पूछे उन से कोई वह ग़ुलाम किस का था ?

:o:

---

१. मार डाला गया। २. ईश्वर के लिए। ३. प्रतिद्वन्द्वी ४. कथन ५. महफिल, सभा ६. प्रबन्ध ७. जानने को इच्छुक ८. अधूरी चर्चा।

जवाबे ख़त का मैं शाकी[1] नहीं यह तो बता क़ासिद[2]
उसे किस हाल में छोड़ा उसे किस हाल में देखा ?
न इन्दर का अखाड़ा है न ऐसी क़ाफ़[3] की परियाँ
हसीनों का तमाशा ख़ूब नैनीताल में देखा ।
हुए हैं 'दाग़' के मज़हब से हैराँ काफ़िर-ओ-मोमिन
कभी इस हाल में देखा, कभी उस हाल में देखा ।

:o:

तौबा है हसीनों को गर पासे-वफ़ा[4] होता
क्या जानिए क्या करते क्या जानिए क्या होता ?
तुम लुत्फ़ अगर करते तो हाल ज़माने का
ऐसा ही हुआ होता ! ऐसा न हुआ होता !!
साक़ी तेरी महफ़िल में चर्चा ही नहीं मै[5] का
इस से तो यह बेहतर था कुछ ज़िक्रे ख़ुदा होता ।
दिल ने मुझे तड़पाया आँखों ने किया रुस्वा[6]
अपनों से हुआ यह कुछ बेगानों से क्या होता ?
ग़ैरों की शिकायत पर, फ़ुर्क़त[7] की हिकायत[8] पर
गर तुम न ख़फ़ा होते तो कौन ख़फ़ा होता ?
अर्मानें हम-आग़ोशी[9] सुन सुन के ढिठाई से
इस कहने के मैं सदक़े "फिर कहिए तो क्या होता" ?
फ़र्याद-ओ-फ़ुग़ां[10] से तुम ऐ 'दाग़' बुरे ठहरे
कुछ भी न किया होता, कुछ भी न हुआ होता ।

:o:

नामाए-आशिक़े-नाशाद[11] न देखा न सुना
आप ने शिकवाए[12] बेदाद न देखा ने सुना ।

---

१. शिकायत करने वाला २. सन्देशवाहक ३. तुर्की के उत्तर में स्थित देश, जहाँ की औरतें बहुत सुन्दर होती हैं । ४. वफ़ा का ध्यान ५. शराब ६. अपमानित ७. प्रेमी से बिछुड़ने की अवस्था ८. कथा ९. प्रेमी से आलिंगन की इच्छा १०. शिकायत ११. दुःखी प्रेमी का पत्र या सन्देश १२. अन्याय (जुल्म) की शिकायत ।

अगले वक़्तों की कहानी से उन्हें नफ़रत है
कभी अफ़सानाए-फ़र्हाद न देखा न सुना।
पूछता है जो कोई ख़त का हमारे मजनूँ
तो वह कहते हैं "किसे याद ? न देखा न सुना।"
आप अपने को जो शागिर्द[1] का शागिर्द गिने
'दाग़' सा हम ने तो उस्ताद न देखा न सुना।

:o:

जो मेरा तकिया रहा, जिस ने मेरा दिल देखा
गरदने-ग़ैर में वह हाथ हिमायल[2] देखा।
क़ाबिले-दीद[3] थीं उस वक्त अदायें[4] उन की
आईना देख के जब मद्दे-मुक़ाबिल[5] देखा।
बज़्मे-अग़्यार[6] का वह हाल बता ऐ क़ासिद
तूने किस की तरफ़ उस शोख़ को मायल[7] देखा ?
मस्त थी आँख तेरी दिल था हमारा बेख़ुद[8]
हम ने दोनों को दमे-मारिका[9] ग़ाफ़िल देखा।
उस ने जब हुक्म दिया था तुझे मर जाना था
'दाग़' तू दे न सका जान तेरा दिल देखा।

:o:

इधर की सुध भी ज़रा ऐ पयाम्बर लेना !
ख़ुदा के वास्ते जल्दी मेरी, ख़बर लेना।
हमें तो शौक़ है बेपर्दा तुम को देखेंगे
तुम्हें है शर्म तो आँखों पे हाथ धर लेना।
फ़रेब[10] दे के लिया दिल तो क्या लिया तुम ने
बतायें हम तुम्हें आता नहीं अगर लेना।

---

१. शिष्य २. लिपटा हुआ ३. देखने योग्य ४. नख़रे ५. अपने सामने अर्थात् आइने के भीतर अपने चेहरे को देखना ६. ग़ैरों अर्थात् प्रद्वन्द्वियों की महफ़िल ७. आकर्षित ८. आत्मविस्मृत, बेसुध। ९. लड़ाई के समय १०. धोखा।

ग़रज़ तुम्हें जो सुनो उनसे ग़ैर का शिकवा
यह क़िस्सा मोल न ऐ 'दाग़' अपने सर लेना।

:o:

जो यूँ हो वस्ल[1] तो मिट जाए सब रंज-ओ-महन[2] अपना
ज़बाँ अपनी दहन[3] उन का ज़बाँ उन की दहन अपना।

न सीधी चाल चलते हैं न सीधी बात करते हैं
दिखाते हैं वह कमज़ोरों को तन कर बांकपन[4] अपना।

कहे देते हैं काफ़िर भभूका बन के आता है
ज़रा दिल थाम लें पहले से अहले-अंजुमन[5] अपना।

ख़बर किस को वह किस का था वह किस का है वह किस का हो
समझता है उसी को शेख़ अपना बिरहमन अपना।

यह हम समझे हुए हैं तुम ने माना है न मानोगे
सवाले-वस्ल से क्यों रायगाँ[6] जाए सुख़न[7] अपना।

जो तख़्ते लाला-ओ-गुल के खिले वह देख लेते हैं
तो फ़र्माते हैं वह है 'दाग़' का यह है चमन अपना।

:o:

तू, तो एक क़तरा[8] भी देती नहीं ऐ ज़ुल्फ़े स्याह[9]
पानी भर भर के ज़माने को पिलाती है घटा।

रात भर जागे हैं अब आँख लगी है उन की
कह दो ख़ामोश हो क्यों शोर मचाती है घटा।

वादा करते हैं वह जिस रोज़ यहाँ आने का
क्या बरसती है कि दरिया ही बहाती है घटा।

तेग़ की तरह चमक जाती है सर पर बिजली
हिज्र[10] में मुझको बला बन के डराती है घटा।

---

१. मिलन २. दुःख-क्लेश ३. मुँह ४. नखरा, तिरछी चाल ५. महफ़िल में उपस्थित व्यक्ति ६. बेकार, वृथा ७. कथन ८. बूँद ९. काले बालों की लट १०. वियोग।

जब उठाते हैं दमे–बादाकशी[1] वह साग़र[2]
कैसी इतराती हुई झूमती आती है घटा।
नहीं सावन में मेरे पास वह माशूक़ ऐ 'दाग़' !
मुझको तड़पाती है बिजली तो रुलाती है घटा।

:o:

बेकार मुफ़्त ख़ाक उड़ाती फिरी सबा[3]
गोशा[4] उलट दिया न किसी की नक़ाब का।
यह बात है बहारे चमन ही के वास्ते
आता नहीं पलट के ज़माना शबाब[5] का।
जब मैं करूँ सवाल तो कहते हैं चुप रहो
क्या बात है जवाब नहीं इस जवाब का।
ख़ुश्बू वही, वही है नज़ाकत, वही है रंग
माशूक़ क्या है फूल है तू भी गुलाब का।
ऐ 'दाग़' बख़्शवायेंगे उम्मत के वह गुनाह
है आसरा जनाबे - रिसालत - मआब[6] का।

:o:

जब वह नादाँ अदू[7] के घर में पड़ा
दाग़ एक 'दाग़' के जिगर में पड़ा।
ऐसे नशे के क्यों न हूँ क़ुर्बां[8]
हाथ उनका मेरी कमर में पड़ा।
शबे-वादा[9] गुज़र चुकी आधी
अब सुना है कि तेल सर में पड़ा।
जब चला 'दाग़' कूए[10] क़ातिल को
एक कोहराम उसके घर में पड़ा।

:o:

---

१. शराब पीने के समय २. मदिरा-पीने का पात्र ३. हवा ४. कोना ५. यौवन, जवानी ६. हज़रत मुहम्मद साहिब। ७. प्रतिद्वन्द्वी ८. बलिहारी ९. जिस रात को मिलने का वादा था १०. गली।

एक सितम ऐ सितमआरा[1] किया
और कहूँ और कहूँ क्या किया ?
सब ने तो दीदार ख़ुदा का किया
मुझ को भी देखा तुझे देखा किया।
नकहते-गुल[2] में है लपट और ही
किस ने यहाँ बन्दे-क़बा वा[3] किया।
देखते ही मुझे कहा रोज़े-हश्र
"तू ने यहाँ भी हमें रुस्वा किया।"
किस से कहें उम्रे-गुज़श्ता[4] का हाल
क्या न किया हम ने यहाँ क्या किया ?
और भी एक रात सही इन्तिज़ार
या न किया उसने करम[5] या किया।
ग़ैर के आते ही वह तेवर न थे
तुमको इन्हीं बातों ने रुस्वा किया।
'दाग़' ने देखे हैं हज़ारों हसीं
आप ने किस शख़्स[6] से दावा किया।

:o:

ग़ैर पर लुत्फ़-ओ-करम बस हो चुका
हो चुका हम पर सितम बस हो चुका।
दिल में रहने दे कसक ऐ चारागर[7]
दर्द अपना कम से कम बस हो चुका।
गर यही क़स्में हैं तो मुझको यक़ीं[8]
आप के सर की क़सम बस हो चुका।
कल जो एक 'दाग़' हज़ीं[9] मशहूर था
आज वह बीमारे-ग़म बस हो चुका।

:o:

---

१. ज़ालिम २. फूल की सुगन्ध ३. कपड़ों के बन्द (बटन) खोल दिये ४. बीता जीवन ५. कृपा ६. व्यक्ति ७. इलाज करने-वाला ८. विश्वास ९. दुःखी।

नाम ज़ेरे[1] आस्माँ बाक़ी रहा
मर मिटों का यूँ निशाँ[2] बाक़ी रहा।
मिट गए दुनिया के जलसे सैकड़ों
है ग़नीमत जो समाँ बाक़ी रहा।
ग़ैर का छल्ला छुपाया आप ने
उस निशानी का निशाँ बाक़ी रहा।
जा चुका ऐ 'दाग़' सब माल-ओ-मता[3]
शुक्र है लुत्फ़े-ज़बाँ[4] बाक़ी रहा।

:o:

इधर देख लेना उधर देख लेना
कनखियों से उसको मगर देख लेना।
न देना ख़ते-शौक़ घबरा के पहले
महल-मौक़ा[5] ऐ नामाबर देख लेना।
कहीं ऐसे बिगड़े सँवरते भी देखे
न आयेंगे वह राह पर देख लेना।
तग़ाफ़ुल[6] में शोख़ी निराली अदा थी
ग़ज़ब था वह मुँह फेर कर देख लेना।
मेरे सामने ग़ैर से भी इशारे
उधर भी इधर देख कर देख लेना।
दिये जाते हैं आज कुछ लिख के तुम को
इसे वक़्ते-फ़ुर्सत[7] मगर देख लेना।
जलाया तो है 'दाग़' के दिल को तुमने
मगर इसका होगा असर देख लेना।

:o:

---

१. आकाश के नीचे अर्थात् संसार में २. चिह्न ३. पूँजी ४. शेरो-शायरी का शौक़ ५. वातावरण ६. अनजाने ७. अवकाश मिलने पर।

इस दिल्लगी में हाल जो दिल का हुआ हुआ
क्या पूछते हैं आप तजाहुल[1] से क्या हुआ।
बेगाना था तो कोई शिकायत न थी हमें
आफ़त तो यह हुई कि वह मिल कर जुदा हुआ।
जिस ने किया तपाक[2] उसी ने किया हलाक[3]
जो आशना[4] हुआ वही ना-आशना[5] हुआ।
आबाद किस क़दर है इलाही अदम[6] की राह
हर दम मुसाफ़िरों का है तांता लगा हुआ।
ए काश मेरे तेरे लिए कल यह हुक्म हो
ले जाओ इनको खुल्द[7] में जो कुछ हुआ हुआ।
किस-किस तरह से उसको जलाते हैं रात-दिन
वह जानते हैं 'दाग़' है हम पर मिटा हुआ।

:o:

ज़बां हिलाओ तो हो जाये फ़ैसला दिल का
अब आ चुका है लबों पर मुआमिला[8] दिल का।
तुम अपने साथ ही तस्वीर अपनी ले जाओ
निकाल लेंगे कोई और मशग़ला[9] दिल का।
क़ुसूर तेरी निगह का है क्या ख़ता[10] उसकी
लगावटों ने बढ़ाया है हौसिला[11] दिल का।
शबाब[12] आते ही ए काश मौत भी आती
उभारता है इसी सिन[13] में वलवला[14] दिल का।
कुछ और भी तुझे ए 'दाग़' बात आती है?
वही बुतों की शिकायत वही गिला[15] दिल का।

:o:

१. जान-बूझकर अनजान बनना २. ख़ातिरदारी अर्थात् प्रेम ३. मारा ४. जान-पहचान वाला ५. जो न पहचाने (अपरिचित) ६. मृत्यु ७. स्वर्ग ८. पूरा हाल ९. कार्य, धंधा १०. दोष ११. साहस १२. जवानी १३. आयु, उम्र १४. जोश १५. निन्दा।

इश्क़ में दिल ने बहुत काम निकाला अपना
सच है मिलता है कहाँ चाहनेवाला अपना?
अपनी नज़रों में तो फिरता है वह क़द बूटा-सा[१]
सर्व[२] गुलचीं[३] को दिखाए क़दे-बाला[४] अपना।
देख कर उसको त-अज्जुब है जनाबे-नासेह[५]
मुझ से फ़र्माते हैं क्यों दिल न संभाला अपना!
इन्तिज़ारे-मै-ओ-साग़र[६] हो कहाँ तक साक़ी
कहीं लबरेज़ न हो जाए प्याला अपना।
हैं बुरे हाल के सब देखने वाले ऐ 'दाग़'
कोई दुनिया में नहीं पूछने वाला अपना।

:o:

तुम गले जब न मिलो लुत्फ़े-मुलाक़ात[७] ही क्या?
मान भी जाओ मेरी बात यह है बात ही क्या?
जा के पी आए वहाँ, आते ही तौबा कर ली
इस क़दर दूर है मस्जिद से ख़राबात[८] ही क्या?
आशिक़ी और फिर ऐसी कि छुपाए न छुपे
मुझसे मुजरिम के लिए चाहिए अस्बात[९] ही क्या?
लहरें आती हैं तबीयत में हमारी क्या-क्या!
बर्क़वश[१०] पास न हो जब तो वह बरसात ही क्या?
तमन्नाए-शबे-वस्ल[११] है किस काफ़िर को
बात करने में गुज़र जाए तो वह रात ही क्या?
आगे उस शोख़ के चुप लग गई उनको ऐ 'दाग़'
मेरे मतलब को जो कहते थे यह है बात ही क्या?

:o:

---

१. नाटा २. सर्व का पेड़, जो काफ़ी ऊँचा होता है ३. माली ४. ऊँचा कद ५. उपदेशक ६. मदिरा और मदिरापात्र की प्रतीक्षा ७. मिलन का आनन्द ८. मदिरालय ९. प्रमाण १०. बिजली के समान चमकनेवाली (अति सुन्दर) प्रेमिका ११. मिलन-रात्रि की अभिलाषा।

देख कर तेरी अदा जी से गुज़र जाएगा
मरनेवाला तो क़यामत[1] में भी मर जाएगा।
ग़ैर का क़िस्सा शबे-वस्ल में क्यों ले बैठे,
बातों-बातों में यूँ ही वक्त[2] गुज़र जाएगा।
बेख़ुदी[3] में है किसे होश कहाँ है क़ासिद[4],
किधर आया नहीं मालूम किधर जाएगा ?
अब तो ए 'दाग़' मेरे ग़म से वह ख़ुश हैं फिर क्या,
आख़िर एक दिन यह ज़माना भी गुज़र जाएगा।

:o:

बादे-सबा[5] ने भी किया उसको बेहिजाब[6]
सीने पै हाथ आ गए जब शाना[7] खुल गया।
रक्खा था हमने पर वह कि उस पर खुले न हाल
सब राज़े-दिल[8] सुनाते ही अफ़साना खुल गया।

:o:

फँस गया दिल बुरी जगह अफ़सोस
कोई पहलू[9] नहीं रिहाई[10] का।
सुलह के बाद वह मज़ा न रहा
रोज़ सामान था लड़ाई का।
हँसी आती है अपने रोने पर
और रोना है जग हँसाई का।
आज वह इम्तेहान करते हैं
वक्त है क़िस्मत - आज़माई[11] का।
दिल उड़ाता है दिल्लगी के मज़े
पूछना क्या लगी लगाई का।
रहा लुत्फ़ इस ज़माने में
मीरज़ा 'दाग़' मीरज़ाई[12] का।

:o:

---

१. प्रलय २. समय ३. मस्ती ४. पत्रवाहक ५. हवा ६. बेपर्दा ७. बाजू ८. दिल का भेद ९. रास्ता १०. छुटकारा ११. भाग्य की परीक्षा १२. 'मिरज़ा' की उपाधि।

क्या मर गया हूँ देख तो ऐ चारागर[१] मुझे
उनकी ज़बां से मेरी वफ़ा का बयाँ[२] है अब।
बाक़ी है आधी रात मगर इस का क्या जवाब
घबरा के अब वह कहते हैं वक्ते-अज़ां[३] है अब।
देखो ज़रा-सी शर्म ने सब कुछ मिटा दिया
वह आँख वह निगाह वह चितवन कहाँ है अब?

:o:

क्या सबब शाद[४] है जो आप ही आप,
चली आती मुझे आज हँसी आप ही आप।
हमनशीं[५] भी तो नहीं हिज्र[६] में दिल क्या बहले,
बात कर लेते हैं दो चार घड़ी आप ही आप।
सोचते हैं कहीं तदबीर[७] भी क़िस्मतवाले
कि निकल जाते हैं अरमाने-दिली आप ही आप।
कुछ तो फ़रमाइए इस बदमज़गी[८] का बाइस[९]
आप ही आप है रंजिश, ख़फ़गी[१०] आप ही आप।
दिल्लगी आग है ऐ 'दाग़' ख़बर लो जल्दी,
जो लगाए से लगी कब वह बुझी आप ही आप!

:o:

आए थे घर में मेरे आग-बगूला[११] बन कर
ठण्डे ठण्डे वह गये बादे-सहर[१२] की सूरत।
आप ने की हैं अबस[१३] शर्म से नीची आँखें
चुभ गई यह भी अदा दिल में नज़र की सूरत।
मुन्तज़िर[१४] हिज्र[१५] में हम, वस्ल[१६] में मुश्ताक़[१७] हो तुम
नज़र आती नहीं दोनों को सहर की सूरत।

---

१. वैद्य २. वर्णन ३. अज़ान देने का समय ४. प्रसन्न ५. प्रिय मित्र ६. वियोग ७. युक्ति ८. रूठने, बिगड़ने ९. कारण १०. नाराज़ होना ११. क्रोध से भरे हुए १२. प्रातः-समीर १३. बिना कारण ही १४. प्रतीक्षा करनेवाला १५. विछोह १६. मिलन १७. अति इच्छुक, बेसब्र।

दरो-दीवार का जलवा नहीं देखा जाता
उनके आते ही बदल जाती है घर की सूरत।
कोई दम कोई घड़ी कल नहीं पड़ती दिल को
मैं बयां किस से करूँ आठ पहर की सूरत।
हज़रते 'दाग़' तो शायर हैं हवा बाँधते हैं
न दुआ[1] की कोई सूरत न असर[2] की सूरत।

:o:

आलमे-यास[3] में घबराए न इन्सान बहुत
दिल सलामत है तो हसरत बहुत अरमान बहुत।
हसरतें[4] रोज़ नई दिल में भरी जाती हैं
थोड़े-थोड़े भी हुए जाते हैं मेहमान बहुत।
सोचिए दिल में तो है इश्क़ निहायत दुशवार
न समझिए तो यही काम है आसान बहुत।
वादा करते ही पलट जाओ हम इससे ख़ुश हैं
दिले-ग़मगीं[5] को ख़ुशी की तो है एक आन[6] बहुत।
दिल से किस तरह भुला दें तुझे ऐ परदा-नशीं
बेख़ुदी[7] में भी तो रहता है तेरा ध्यान बहुत।
बज़्मे-अहबाब[8] में ऐ 'दाग़' कभी तो हँस-बोल
देखते हैं तुझे हर वक्त परीशान बहुत।

:o:

पड़ा है बल जबीं[9] पर क्या सबब, क्या वजह क्या बाइस[10]
हुआ क्यों तेज़ खंजर क्या सबब क्या वजह क्या बाइस ?
ख़फ़ा रहते हो अक्सर[11] क्या सबब क्या वजह क्या बाइस
सितम होते हैं मुझ पर क्या सबब क्या वजह क्या बाइस ?

---

१. प्रार्थना २. प्रभाव ३. निराशा की दशा में ४. अपूर्ण इच्छाएँ ५. दुःखी मन ६. क्षण ७. वह दशा, जब अपने-आपको भी सुध न हो ८. मित्र-मण्डली। ९. माथा १०. कारण ११. प्रायः।

कहा गर हमने हरजाई तो क्यों तुमने बुरा माना
फिरा करते हो दिन भर क्या सबब क्या वजह क्या बाइस?
तबियत मेरी जब सम्भली ज़रा, उन को अजब आया[1]
हुआ आराम क्योंकर क्या सबब क्या वजह क्या बाइस?
इशारों में हुई थीं मुझसे उनसे आज कुछ बातें
यही चर्चा है घर-घर क्या सबब क्या वजह क्या बाइस?
सम्भल कर गुफ्तगू करते हो, लेकिन बातों-बातों में
बिगड़ जाते हैं तेवर[2] क्या सबब क्या वजह क्या बाइस?
तुम्हीं जानो, तुम्हीं समझो, वह क्यों इतना परीशां है
बताए 'दाग़' मुज़्तर[3] क्या सबब क्या वजह क्या बाइस?

:o:

आज़माया है मुदाम[4] आपको बस बस अजी बस
दोनों हाथों से सलाम आपको बस बस अजी बस!
मुँह न खुलवाइए मेरा यूँ ही रहने दीजे
याद भी है वह कलाम आपको बस बस अजी बस।
हमने कल देख लिया, देख लिया, देख लिया
कहीं जाते सरे-शाम आपको बस बस अजी बस!
कीजिए हाथ लगा कर जो मेरा काम तमाम
यह भी आता नहीं काम आपको बस बस अजी बस!
यह तो कहिए कि निशान उसका मिटाया किसने?
याद है 'दाग़' का नाम आपको बस बस अजी बस!

:o:

काफ़िर वह ज़ुल्फ़े-पुरशिकन[5] एक इस तरफ़ एक उस तरफ़
फिर उस पै चश्मे सेहर-फ़न[6] एक इस तरफ़ एक उस तरफ़।
हैं आसमाने-हुस्न[7] के रौशन सितारे महजबीं[8]
बाज़ू पै तेरे नौरतन[9] एक इस तरफ़ एक उस तरफ़।

---

१. आश्चर्य हुआ २. रुष्ट हो जाते हो ३. बेचैन ४. सदैव ५. बल खाई हुई बालों की लट ६. मोहित कर देनेवाली नशीली आँखें ७. सौंदर्य रूपी आकाश ८. चाँद के समान सुन्दर ९. नगीनों से जड़ा हुआ आभूषण।

ग़ैरों का मजमा[1] और तुम, परियों का जमघट और हम
पहलू-ब-पहलू अंजुमन[2] एक इस तरफ़ एक उस तरफ़।
रुख़सार तेरे सीम्गूं[3] फिर उस पे गुल्गूं[4] का रंग
फूला है क्या रंगीं चमन एक इस तरफ़ एक उस तरफ़।
इतरा रहा है 'दाग़' क्या हंगामे-गुलगश्ते-चमन[5]
रंगीं क़बा[6] गुलपैरहन[7] एक इस तरफ़ एक उस तरफ़।

:o:

वह कहते हैं दिल की कहाँ साफ़-साफ़
बज़ाहिर[8] है उनका बयाँ[9] साफ़-साफ़।
कुदूरत[10] का बाइस[11] तो कोई खुले
बयाँ कीजिए मेहरबाँ साफ़-साफ़।
मेरे राज़े-दिल की है उनको तलाश
कहीं कह न दे राज़दाँ[12] साफ़-साफ़।
रहे ज़ेरे-आरिज़[13] कहाँ शब[14] को फूल
नज़र आते हैं सब निशाँ साफ़-साफ़।
मुहब्बत के क़िस्से हैं उलझे हुए
सुनो मुझसे तुम दास्ताँ साफ़-साफ़।
पसन्द आए हमको भी अशआरे 'दाग़'
ज़बाँ पाको-शुस्ता[15] बयाँ साफ़ - साफ़।

:o:

मिट गए अफ़सोस सारे ज़ौक़-शौक़[16]
हाय वह हम और हमारे ज़ौक़-शौक़!

---

१. भीड़ २. सभा, महफिल ३. चांदी के-से रंग वाले अर्थात् सफ़ेद ४. रूज़ (जिस से गालों को गुलाबी किया जाता है) ५. बाग में टहलते हुए ६. ढीला-ढाला, लम्बा कोट ७. गुलाबी रंग का लिबास ८. प्रगटतया ९. कथन, वर्णन १०. मन-मुटाव, रंजिश ११. कारण १२. भेदी १३. गालों के नीचे १४ रात १५. साफ़-सुथरी एवं सलीक़े की १६. इच्छा एवं अभिलाषा।

दिल्लगी हो या हँसी या छेड़-छाड़
होते हैं प्यारों के प्यारे जौक़-शौक़।

आस टूटी दिल हमारा मर गया
अपने-अपने घर सिधारे जौक़-शौक़।

हर गली कूचे में अब है ताक-झाँक
फिरते हैं उनको उभारे जौक़-शौक़।

'दाग़' साहब भी हुए आशिक़-मिजाज
हो गया उनका भी बारे जौक़-शौक़।

:०:

उधर देखना नामाबर[१] ग़ौर से
वह महफ़िल में देखें जिधर देर तक।

हया से झुकी थीं कब आँखें तेरी
लड़ी है किसी से नजर देर तक।

यह समझे न समझे मेरा मुद्दआ[२]
हिली उनकी गरदन मगर देर तक।

तेरे वादे से जिन्दगी बढ़ गई
जिए हम इस उम्मीद पर देर तक।

मुहब्बत में तकरार का है मजा
गिले[३] हों जो बाहमदिगर[४] देर तक।

नई चाह छुपती है ऐ 'दाग़' कब
उड़ेगी अभी यह ख़बर देर तक।

:०:

नहीं सुनते वह अब हमारी बात,
सच है बन आए की है सारी बात।

ख़ैर से उसने ही न पूछा हाल,
करने देती न बेक़रारी बात।

---

१. पत्र ले जानेवाला २. अभिप्राय ३. शिकायतें ४. आपस में

हाले-दिल सुन के यह जवाब मिला,
अब न होगी मेरी तुम्हारी बात।
खेल है इम्तेहाँ तेरे आगे,
मेरे आगे है जाँनिसारी[1] बात।
खामोशी में अदा करें मतलब,
यह तो है उन की एख्तियारी बात।
लूट लेती है 'दाग़' के दिल को,
तेरी हर एक प्यारी-प्यारी बात।

:o:

पसे दीवार[2] जो उसने मेरी आवाज़ सुनी,
वहीं दरबानों[3] को घबरा के पुकारा झटपट।
ब हुआ एक निगह से जो मेरा काम तमाम,
फिर के फिर देख लिया उसने दोबारा झटपट।
नामाबर[4] ज़िन्दा जो फिरता है तो यह कहता है,
अब तो दिलवाइए इनआम हमारा झटपट।
बब परीशानिए आशिक़ की मुसीबत सुन ली,
उसने बिखरी हुई ज़ुल्फ़ों[5] को सँवारा झटपट।
फिर न कहियेगा कि हम से न कहा 'दाग़' का हाल,
लीजिए उसकी खबर आप ख़ुदारा[6] झटपट।

:o:

मेरा जुदा[7] मिज़ाज है उनका जुदा मिज़ाज,
फिर किस तरह से एक हो अच्छा-बुरा मिज़ाज।
देखा न इस क़दर किसी माशूक़ का ग़ुरूर,
अल्लाह क्या दमाग़ है अल्लाह क्या मिज़ाज।
किस तरह दिल का हाल खुले इस मिज़ाज से,
पूछूँ मिज़ाज तो वह कहें आप का मिज़ाज।

---

१. जान दे देना २. दीवार के पीछे से ३. द्वारपालों ४. पत्र ले जाने वाला ५. बालों ६. ख़ुदा के लिए। ७. अलग

तुमको ज़रा सी बात की बर्दाश्त हो नहीं,
ऐसा अखलखुरा भी है किस काम का मिज़ाज।
नाइत्तफ़ाक़ियाँ थीं पयाम-ओ-सलाम तक,
जब मिल गई नज़र से नज़र मिल गया मिज़ाज।
आख़िर यह अर्ज़े-हाल है दुश्नाम तो नहीं,
हाथों से क्यों निकलने लगा आप का मिज़ाज।
कल उनका सामना जो हुआ ख़ैर हो गई,
बदली हुई निगाह थी बदला हुआ मिज़ाज।
उनको बग़ैर छेड़ किए चैन ही नहीं,
कितनी शरीर तबा है, क्या चुलबुला मिज़ाज।
क़ासिद को चुट्कियों में हमेशा उड़ा दिया,
उस शोख़ का भी शोख़ है बे-इन्तेहा मिज़ाज।
सच है ख़ुदा की देन में क्या दख़्ल हो सके,
एक 'दाग़' का मिज़ाज है, एक आप का मिज़ाज॥

:o:

अव्वल ही से है उनका ख़ुशामद-तलब मिज़ाज,
फिरहाँ-में-हाँ नदीम[२] मिलाते हैं झूट-सच।
देखें तो हम भी उस बुते-पुरफ़न[३] की बात-चीत
क्योंकर बताने वाले बताते हैं झूट-सच।
आता है दास्ताने मोहब्बत में उनको लुत्फ़,
बेपर की हम भी रोज़ उड़ाते हैं झूट-सच।
वादा वफ़ा करें न करें, आएँ या न आएँ,
घबरा के कुछ वह बोल तो जाते हैं झूट-सच।
इन्साफ़ यह कि उनके सवालों का क्या जवाब,
बातें अगरचे हम भी बनाते हैं झूट-सच।
उस नुक्ताचीं[४] से 'दाग़' यह तक़रीर पेचदार,
आगे तुम्हारे सब अभी आते हैं झूट-सच।

:o:

---

१. अलग-अलग, २. साथी, संगी ३. चतुर ४. बात-बात पर टोकने वाला।

नरगिसी चश्म[1] है बला की शोख़,
शोख़ भी और इन्तेहा की शोख़।
हर निगह तेरी इन्तेहा की शरीर,
हर अदा तेरी इन्तेहा की शोख़।
तेरी तहरीर इन्तेहा की मतीन[2],
तेरी तक़रीर इन्तेहा की शोख़।
क्या ठिकाना तेरी तबीअत का,
इब्तेदा में है इन्तेहा की शोख़।
इस मुरक्क़े[3] की जाँ वही तो है,
'दाग़' ने ख़ूब शक्ल ताकी शोख़।

:o:

न हो मेह्रबां हो के नामेह्रबां,
अदावती बुरी है मोहब्बत के बाद।
मेरे हाल पर रहम आ ही गया,
वह चलकर पलट आए रुख़सत के बाद।
वफ़ादार होते हैं देर-आशना,
यह उक़्दा[4] खुला एक मुद्दत के बाद।
तड़पना न देखा गया 'दाग़' का,
हुआ ख़ातमा किस मुसीबत के बाद।

:o:

ऐ वादाफ़रामोश रही तुझको जफ़ा याद,
यह भूल भी क्या भूल है, यह याद भी क्या याद।
भूला नहीं मैं क़तए-ताल्लुक़ में ग़म-ओ-ऐश,
इसका भी मजा याद है उसका भी मजा याद।
वह सुनते हैं कब दिल से मेरी राम-कहानी,
फ़रमाते हैं कुछ और भी है इसके सिवा याद?

---

१. नर्गिस के फूल की तरह आंख २. गम्भीर ३. अल्बम अर्थात् संसार ४. गुत्थी।

महशर में हसीनों की तरफ़ ताक लगाए,
वह मैं ही तो हूँगा यह रहे तुमको पता याद।
माशूक़ से ऐ 'दाग़' तग़ाफ़ुल का गिला[1] क्या,
क्या याद करे तुझको करे उसकी बला याद।

:o:

ख़लवत में जब किसी को न पाया इधर-उधर,
घबरा के देखते थे वह क्या-क्या इधर-उधर।
महशर में बाद पुर्सिशे-आमाल देखना,
हम देखते फिरेंगे तमाशा इधर-उधर।
क्या-क्या शबे-विसाल सवाल-ओ-जवाब में,
रहता है हार-जीत का नक़्शा इधर-उधर।
उस फ़ितनागर से फिर भी तो पाला पड़ेगा 'दाग़',
है ताक-झाँक आप की बेजा इधर-उधर।

:o:

सुन लेते हैं रस्ते में जो आहट भी किसी की,
उल्टे ही पलट जाते हैं वह घर से निकल कर।
घबराए हुए तौर[2] हैं हर नक़्शे-क़दम[3] के,
यह कौन गया सुब्ह तेरे घर से निकल कर।
पहचान लिया सब ने यह आते हैं वहीं से,
हम छुप न सके महफ़िले-दिलबर से निकल कर।
दिल्ली से चलो 'दाग़' करो सैर दकन की,
गौहर[4] की हुई क़द्र समन्दर से निकल कर।

:o:

क़हर है अह्दे[5] जवानी की उमंग और तरंग,
दिल भी माने, वह रक़ीबों[6] को न चाहें क्योंकर।

---

१. शिकायत २. लक्षण ३. पदचिह्न ४. मोती ५. ज़माना ६. प्रतिद्वन्द्वी।

न दिलासा न तसल्ली न तशफ़्फ़ी न वफ़ा,
दोस्ती उस बुते बद्ख़ू से निबाहें क्योंकर।
चाह का नाम जब आता है बिगड़ जाते हो,
वह तरीक़ा तो बता दो तुम्हें चाहें क्योंकर।
शर्म से आँख मिलाते नहीं देखा उनको,
पार होती हैं कलेजे के निगाहें क्योंकर।
यह चलन किसने सिखाए यह तरीक़े किसने,
आगईं जौर-ओ-[1]जफ़ा की तुम्हें राहें क्योंकर।
'दाग़' वह चाहते हैं ग़ैर को चाहे यह भी,
जो बुरा चाहे हमारा उसे चाहें क्योंकर।

:०:

मज़ा दे गया है शबाब[2] अव्वल-अव्वल
मिले ख़ूबरू[3] इन्तिख़ाब[4] अव्वल-अव्वल।
ख़ुदा शर्म रक्खे तेरी इन्तहा तक
कि डाली है मुँह पर निक़ाब अव्वल-अव्वल।
उन्हीं से फिर आख़िर को खुल खेलते हैं
वह करते हैं जिन से हिजाब[5] अव्वल-अव्वल।
वह पैग़म्बर की मुदारात[6] पैहम[7]
वह रस्मे[8] सवाल-ओ-जवाब अव्वल-अव्वल।
वह सैरे चमन वह तमाशाए दरिया
वह लुत्फ़े शबे माहताब[9] अव्वल-अव्वल।
वह गलियों में रातों को छुप-छुप के जाना
वह यारों से कुछ-कुछ हिजाब अव्वल-अव्वल।
वह हर बात का शौक़ बे-सोचे-समझे
वह हर काम करना शिताब[10] अव्वल-अव्वल।

---

१. अत्याचार २. माथा २. जवानी ३. सुन्दर चेहरे वाले ४. चुने हुए ५. शर्म, पर्दा ६. ख़ातिर-बात ७. बार-बार ८. पूछ ताछ का तरीक़ा ९. चाँदनी रात १०. जल्दी।

वह पहले-पहल दिल लगाना किसी से
वह कुछ शौक़ का इज़्तेराब[1] अव्वल-अव्वल।

:o:

अभी हमारी मोहब्बत किसी को क्या मालूम
किसी के दिल की हक़ीक़त किसी को क्या मालूम।
बज़ाहिर[2] उनको हयादार लोग समझे हैं
हया में जो है शरारत किसी को क्या मालूम।
किया करें वह सुनाने को प्यार की बातें
उन्हें है मुझसे अदावत किसी को क्या मालूम।
ख़ुदा करे न फँसे दामे-इश्क़ में कोई
उठाई है जो मुसीबत किसी को क्या मालूम।
जनाबे 'दाग़' के मशरब[3] को हम से तो पूछो
छिपे हुए हैं यह हज़रत, किसी को क्या मालूम।

:o:

और क्या 'दाग़' के अश्आर[4] असर करते हैं
गुद्गुदी दिल में हसीनों के मगर करते हैं।
ग़ैर के सामने यूँ होते हैं शिक्वे मुझसे
देखते हैं वह उधर, बात इधर करते हैं।
दर-ओ-दीवार से भी रश्क[5] मुझे आता है
ग़ौर से जब किसी जानिब[6] वह नजर करते हैं।
एक तो नशाए मै[7] उस पे नशीली आँखें
होश उड़ते हैं जिधर को वह नजर करते हैं।
हज़रते 'दाग़' को दिल्ली की हवा खूब लगी
रात-दिन ऐश हैं जलसों में नजर करते हैं।

:o:

---

१. बेचैनी २. जाहिर में ३. जीवन सिद्धान्त ४. कविताएँ ५. ईर्ष्या ६. तरफ़ ७. शराब का नशा।

उज्र आने में भी है और बुलाते भी नहीं
बाइसे-तर्के-मुलाक़ात[1] बताते भी नहीं।
सर उठाओ तो सही आँख मिलाओ तो सही
नशाए-मै भी नहीं, नींद के माते भी नहीं।
क्या कहा फिर तो कहो हम नहीं सुनते तेरी
नहीं सुनते तो हम ऐसों को सुनाते भी नहीं।
ख़ूब पर्दा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं
साफ़ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं।
ज़ीस्त[2] से तंग हो ऐ 'दाग़' तो क्यों जीते हो
जान प्यारी भी नहीं, जान से जाते भी नहीं।

:o:

हम से जब वादा किया था वह बहुत कम्सिन थे,
देखिए क़ाबिले-इनकार हुए हैं कि नहीं।
'दाग़' इस फ़िक्र में दिन-रात घुला जाता है
मुझसे राज़ी मेरे सरकार हुए हैं कि नहीं।

:o:

शिक्वए-मेह्रओ-वफ़ा[3] किस ने कहा किस ने सुना
फिर वही आप मेरा नाम लिए जाते हैं।
जब तसव्वुर[4] में कोई पर्दा-नशीं होता है
दिल से आंखों के बहुत काम लिए जाते हैं।
दिल ने जो हम से कहा है वह अदा करना है
अपना हम आप ही पैग़ाम लिए जाते हैं।
क्या मज़ा है कि शिकायत में मज़ा आता है
ख़ुद वह इलज़ाम-पे-इलज़ाम लिए जाते हैं।

---

१. मुलाक़ात करना छोड़ने का कारण २. ज़िन्दगी ३. मेहरबानी और प्रेम की शिकायत ४. विचारों।

पहले तो ऐसे वफ़ादार को आज़ाद किया
मोल अब 'दाग़' के हमनाम लिए जाते हैं।

:o:

हमारी तरफ़ अब वह कम देखते हैं
वह नज़रें नहीं जिनको हम देखते हैं।

सलामत रहे दिल बुरा है कि अच्छा
हज़ारों में यह एक दम देखते हैं।

रहा कौन महफ़िल में अब आने वाला
वह चारों तरफ़ दम-ब-दम देखते हैं।

उधर शर्म हायल[1], इधर ख़ौफ़ माने[2]
न वह देखते हैं, न हम देखते हैं।

हमें 'दाग़' क्या कम है यह सरफ़राज़ी[3]
कि शाहे-दकन के क़दम देखते हैं।

:o:

हज़ार रंज-ओ-मुसीबत में दिन गुज़ारे हैं
कभी जो लड़ गई क़िस्मत तो वारे-न्यारे हैं।

बिगड़ गई है तबीअत, बदल चुका है मिज़ाज
न तुम हमारे हो अब से न हम तुम्हारे हैं।

वफ़ा करो कि जफ़ा, इख़्तियार है तुमको
बुरे हैं या हैं भले जैसे हैं तुम्हारे हैं।

वह तुन्दख़ू[4] है तो हो 'दाग़' कुछ नहीं पर्वा
मिज़ाज बिगड़े हुए सैकड़ों सँवारे हैं।

:o:

कुछ तेरा शौक़ कुछ तेरी हसरत[5]
और रक्खा ही क्या है अब हम में।

चल गई चाल आप की हम पर
सीधे-सादे थे आगए दम में।

---

१. रोकने वाली २. मना करने वाला ३. बलंदी ४. गर्म मिज़ाज ५. चाह, उम्मीद।

अब इनाएत[1] है क्यों ख़ुदा के लिए ?
कौन सी बात बढ़ गई हम में ।
'दाग़' को वह जला के कहते हैं
हमने रौशन किया है आलम[2] में ।

:o:

शुक्र भी ठहरा शिकायत मैं करूँ तो क्या करूँ ?
बात करनी है क़यामत, मैं करूँ तो क्या करूँ ?
कर दिया मजबूर इस आशिक़-मिज़ाजी ने मुझे
आ ही जाती है तबीअत मैं करूँ तो क्या करूँ ?
मुझसे फ़र्माते हैं वह यह तो ख़ुदा का काम है
तेरी तस्कीने-तबीअत[3] मैं करूँ तो क्या करूँ ।
होश ही जाते रहे तो आदमी क्या कर सके
देख लूँ जब अच्छी सूरत, मैं करूँ तो क्या करूँ ।
कर दिया शाहे-दकन ने 'दाग़' मुतस्ग़नी[4] हमें
आर्ज़ूए-जाह-ओ-दौलत[5] मैं करूँ तो क्या करूँ ।

:o:

इस अदा से वह जफ़ा करते हैं
कोई जाने कि वफ़ा[6] करते हैं ।
हम को छेड़ोगे तो पछताओगे
हँसने वालों से हँसा करते हैं ।
नामाबर[7] तुझको सलीक़ा ही नहीं
काम बातों में बना करते हैं ।
यह बताता नहीं कोई मुझको
दिल जो आता है तो क्या करते हैं ।
किस क़दर हैं तेरी आँखें बेबाक[8]
इन से फ़ित्ने[9] भी हया करते हैं ।

---

१. दया २. दुनिया ३. दिल को तसल्ली देना ४. दुनिया से बेफ़िक्र ५. धन-दौलत की इच्छा ६. प्रेम ७. पत्र ले जानेवाला ८. बेहया ९. फ़साद, झगड़े ।

'दाग़' तू देख तो क्या होता है
　　जब्र[1] पर सब्र किया करते हैं।

:o:

या तो ऐसी मेह्रबानी मुझ पर या कुछ भी नहीं
　　इब्तिदा-ही-इब्तिदा थी इन्तिहा कुछ भी नहीं।
बाद शोख़ी के तेरी तर्ज़े-हया कुछ भी नहीं
　　वह अदाए-दिलरुबा थी यह अदा कुछ भी नहीं।
देख कर तस्वीरे यूसुफ़[2] कह दिया कुछ भी नहीं
　　आप ही सब कुछ हैं गोया दूसरा कुछ भी नहीं।
सैकड़ों दीं झिड़कियाँ मुझको हज़ारों गालियाँ
　　और फिर कहते हैं मैं ने तो कहा कुछ भी नहीं।
सुन के हाले-दिल मेरा रखते हैं वह कानों पे हाथ
　　हाय इस अन्दाज़ से गोया सुना कुछ भी नहीं।
बेख़ुदी है वस्ल में या आई है तेरी हया
　　देखता सब कुछ हूँ लेकिन सूझता कुछ भी नहीं।
अपने दम को आदमी हर-दम ग़नीमत जान ले
　　ख़ाक का फिर ढेर है बादे-फ़ना कुछ भी नहीं।
तू ने क़स्सामे-अज़ल[3] ग़ैरों को क्या-क्या कुछ दिया
　　'दाग़' है महरूम[4] इस के नाम का कुछ भी नहीं।

:o:

ख़त में लिक्खे हुए रंजिश के कलाम आते हैं
　　किस क़यामत के यह नामे मेरे नाम आते हैं।
रहरवे[5]-राहे-मोहब्बत का ख़ुदा हाफ़िज़[6] है
　　इस में दो-चार बहुत सख़्त मक़ाम आते हैं।
वह डरा हूँ कि समझता हूँ यह धोका तो न हो
　　अब वहाँ से जो मोहब्बत के पयाम आते हैं।

---

१. मजबूरी २. एक पैग़म्बर जिन की सुन्दरता मशहूर है ३. ब्रह्मा ४. कुछ न पाने वाला ५. राही ६. अल्लाह मालिक।

सब्र करता है कभी और तड़पता है कभी
दिले-नाकाम को अपने यही काम आते हैं।
वस्ल की रात गुज़र जाए न बेलुत्फ़ी में
कि मुझे नींद के झोंके सरे-शाम आते हैं।
'दाग़' की तरह से गुल होते हैं सद्क़े क़ुर्बान
बहरे गुलगश्त चमन में जो निज़ाम आते हैं।

:o:

वह दुश्नाम[1] लाखों मुझे दे रहे हैं
मज़े लेने वाले मज़े ले रहे हैं।
तसल्ली मेरे दिल को क्या दे रहे हैं
कलेजे में वह चुटकियाँ ले रहे हैं।
रक़ीबों[2] की है चाँदनी चार दिन की
हमेशा कहीं दौर-दौरे रहे हैं।
वहाँ खाक उड़ती है अब वाए हसरत[3]
जहाँ सालहा-साल जलसे रहे हैं।
मज़ा दे गया है फ़साना हमारा
महीनों वहाँ इसके चर्चे रहे हैं।
मोहब्बत में अच्छा नहीं दौड़ चलना
जो आगे चले हैं वह पीछे रहे हैं।
नसीबों से मिलता है दर्दे-मोहब्बत
यहाँ मरने वाले ही अच्छे रहे हैं।
गई 'दाग़' के साथ मेह्र-ओ-मोहब्बत
फ़क़त[4] अब तो दावे-ही-दावे रहे हैं।

:o:

करूँ क्या चार दिन की ज़िन्दगी में
रही जाती है हसरत जी-की-जी में।

---

१. गाली। २. प्रतिद्वन्दियों ३. हाय अफ़सोस ४. केवल।

न इतरा ऐ दिले-नादाँ शबे वस्ल[1]
कोई ग़म हो ही जाता है ख़ुशी में।

मेरी जानिब से ऐ क़ासिद यह कहना
तुझे मैं देख लेता ज़िन्दगी में।

ग़ज़ब वह हर अदा पर उस का कहना
भला यह बात देखी है किसी में ?

तुम्हें खुल जाएगी दिल की तमन्ना[2]
अभी है बन्द ख़ुश्बू इस कली में।

वह ले कर क्या करें उश्शाक़[3] के दिल
किसी में दाग़ है, काँटा किसी में

अदू से मिल के फिर ऐसी ढिठाई ?
ज़रा शर्माए होते अपने जी में।

दिया दिल हमने उनको यह समझ कर
कि अपनी जान बचती है इसी में।

तुझी पर जान देता क्यों ज़माना
अगर यह बात होती हर किसी में।

दिले-वीराँ[4] के ज़ाहिर पर न जाओ
न होने पर भी सब कुछ है इसी में।

तेरा आज़ुर्दा[5] होना भी अदा है
मगर वह दिल्लगी में या हँसी में।

अदावत उनकी ज़ाहिर हो न उलफ़त
वही है जो समझ लो अपने जी में।

तुम्हें क्या छेड़ कर ख़ुश हों वह ऐ 'दाग़'
कि तुम तो रोए देते हो हँसी में।

:o:

दम नहीं दिल नहीं दमाग़ नहीं
कोई देते तो अब वह 'दाग़' नहीं।

---

१. मिलन की रात २. आशा ३. आशिक़ का बहुवचन ४. उजड़े हुए दिल ५. नाख़ुश होना।

बात करनी तो बार[1] है तुम को
बात सुनने का भी दमाग़ नहीं।
थी ज़माने में रौशनी जिस की
हाय उस घर में अब चराग़ नहीं।
मस्त कर दे निगाह से साक़ी
हाजते[2]-साग़र-ओ-अयाग़[3] नहीं।
'दाग़' को क्यों मिटाए देते हो
दिल से हो दूर यह वह दाग़ नहीं।

:०:

हमेशा ताज़ा गुलरू देखता हूँ
बहारे रंग-ओ-बू है और मैं हूँ।
न आए और कोई दम तो फिर क्या
युँही सी आर्ज़ू है और मैं हूँ।
कहीं जमती नहीं अपनी तबीअत
ख़याले-चारसू है और मैं हूँ।
मिलेंगे कल कि वह समझेंगे मुझ से
कहा है 'दाग़' तू है और मैं हूँ।

:०:

नींद आए जो किसी रात यह मुम्किन ही नहीं
मुझ पे गुज़रे न क़यामत वह कोई दिन ही नहीं।
है लड़कपन का ज़माना वह अदा क्या जानें?
अभी मौसम ही नहीं, दिन ही नहीं, सिन ही नहीं।
किसको ऐ 'दाग़' सुनाएँ ग़ज़ल अपनी कह कर
मीर[4]-ओ-मिर्ज़ा[5] ही नहीं, ग़ालिब-ओ-मोमिन[6] ही नहीं।

:०:

---

१. मुश्किल, बोझ २. ज़रूरत ३. प्याला व सुराही ४. मीर तक़ी मीर ५. मिर्ज़ा रफ़ी सौदा ६. हकीम मोमिन ख़ाँ मोमिन।

सब लोग जिधर वह हैं उधर देख रहे हैं
हम देखनेवालों की नजर देख रहे हैं।

हरचन्द[1] कि हर रोज की रंजिश है क़यामत
हम कोई दिन इस को भी मगर देख रहे हैं।

आमद है किसी की कि गया कोई इधर से
क्यों सब तरफ़े-राहे-गुजर देख रहे हैं ?

ख़त ग़ैर का पढ़ते थे, जो टोका तो वह बोले
अख़बार का पर्चा है ख़बर देख रहे हैं।

मैं 'दाग़' हूँ मरता हूँ इधर देखिए मुझको
मुँह फेर के यह आप किधर देख रहे हैं।

:o:

उनके एक जाँनिसार[2] हम भी हैं
हैं जहाँ सौ हजार, हम भी हैं।

तुम भी बेचैन, हम भी हैं बेचैन
तुम भी हो बेक़रार, हम भी हैं।

बज्मे[3]-दुशमन में ले चला है दिल
कैसे बेएख्तियार हम भी हैं।

तुम अगर अपनी गों के हो माशूक़
अपने मतलब के यार हम भी हैं।

ग़ैर का हाल पूछिए हम से
उसके जलसे के यार हम भी हैं।

कौन सा दिल है जिस में 'दाग़' नहीं
इश्क़ में यादगार हम भी हैं।

:o:

यह तो नहीं कि तुम सा जहाँ में हसीं नहीं
इस दिल को क्या करूँ यह बहलता कहीं नहीं।

---

१. हालांकि २. जान निछावर करने वाला ३. सभा, महफ़िल।

हाँ-हाँ कहो जबान से या तुम नहीं-नहीं ?
हम को तुम्हारी बात का मुतलक़[1] यक़ीं नहीं।
तुम मेह्रबान हो कि न हो इससे बहस क्या
वह दिल नहीं, वह लाग नहीं, वह हमीं नहीं।
यह क्या कहा, मुआफ़ करो तुम कहा-सुना
दम[2] दे रहा हूँ मैं यह दमे वापसीं[3] नहीं।
क्या जिक्रे-बेवफ़ाइए-दुश्मन पे याद है
गरदन हिला-हिला के वह कहना, नहीं-नहीं ?
कहता हूँ दिल से और हसीं[4] ढूँढिए कोई
आता है फिर ख़याल कि ऐसा कहीं नहीं।
बातें तुम्हारी और तुम्हारी शिकायतें
जो कुछ सुनी हैं हम ने वह तुमसे कहीं नहीं।
कहते हैं लोग 'दाग़' से वह बदगुमान है
ऐसा तुम्हारी बात से उस को यक़ीं नहीं।

:o:

वह निहायत[5] हमें मग़रूर[6] नजर आते हैं
पास बैठे हैं मगर दूर नजर आते हैं।
शुक्र करता हूँ उन्हें देख के दुश्मन हों कि दोस्त
मुझको दुनिया में जो मसरूर[7] नजर आते हैं।
मर के भी दाग़े-मोहब्बत के निशाँ कुछ न मिटे
'दाग़' के दिल में बदस्तूर[8] नजर आते हैं।

:o:

इस नहीं का कोई इलाज नहीं
रोज कहते हैं आप "आज नहीं"।
आईना देखते ही इतराए
फिर यह क्या है अगर मिजाज नहीं ?

---

१. बिल्कुल २. धोखा ३. मरने का समय ४. प्रेमिका ५. बहुत ६. घमंडी ७. प्रसन्न ८. वैसे ही।

हो सकें हम मिज़ाजदाँ क्योंकर ?
हम को मिलता तेरा मिज़ाज नहीं।

दर्दे[१] फ़ुर्क़त की गो दवा[२] है विसाल[३]
इस के क़ाबिल भी हर मिज़ाज नहीं।

सब्र भी दिल को 'दाग़' दे लेंगे
अभी कुछ इसकी एहतियाज[४] नहीं।

:०:

मजाल[५] किसकी है ऐ सितमगर, सुनाए जो तुझको चार बातें
भला किया एतबार तू ने हज़ार मुँह हैं हज़ार बातें।

रक़ीब का ज़िक्र वस्ल की शब फिर उस पे ताकीद[६] है कि सुनिए
तुम्हें तो एक दास्तान[७] ठहरी हमें यह हैं नागवार बातें।

जो कैफ़ियत देखनी है ज़ाहिद तो चल के तू देख मैकदे[८] में
बहक-बहक कर मज़े-मज़े की सुनाएँगे बादाख़्वार[९] बातें।

निगाहें दुश्नाम[१०] दे रहीं हैं, अदाएँ पैग़ाम दे रहीं हैं
कभी न भूलेंगे हश्र तक हम रहेंगी एक यादगार बातें।

हमारे सर की क़सम न खाओ, क़सम है हम को यक़ीं न होगा
तुम्हारे नापायदार[११] वादे, तुम्हारी बे-एतबार बातें।

फ़साने-ए-दर्दो-ग़म सुनाया, तो बोले वह झूट बोलता है
सुनी हुई है बहुत कहानी न हमसे ऐसी बघार बातें।

मज़ा तो उस वक़्त झूट-सच का खुले कि है कौन रास्ती पर[१२]
ख़ुदा के आगे मेरी तुम्हारी अगर हों रोज़े-[१३]शुमार बातें।

अभी से कुछ है उदास क़ासिद, अभी से है बदहवास क़ासिद
सँभल-सँभल कर समझ-समझ कर करेगा क्या बेक़रार बातें।

तुम्हारी तहरीर[१४] में है पहलू[१५], तुम्हारी तक़रीर[१६] में है जादू
हँसे न किस तरह दिल हमारा जहाँ हों यह पेचदार बातें।

---

१. वियोग के दुख २. हालाँकि ३. मिलन ४. ज़रूरत ५. हिम्मत ६. इसरार ७. कहानी ८. शराब ख़ाना ९. शराबी १०. गाली ११. टूट जाने वाले, दुर्बल १२. सत्य १३. क़यामत का दिन १४. लेख १५. कई अर्थ निकलना १६. बात-चीत।

बुरी बला है यह 'दाग़' पुरफ़न[1] तुम इसको हरगिज़ न मुँह लगाना
वगरना ढब पर लगा ही लेगा सुनीं अगर इसकी चार बातें।

:o:

बुताने[2] माहवश[3] उजड़ी हुई मंज़िल में रहते हैं
कि जिसकी जान जाती है उसी के दिल में रहते हैं।

हज़ारों हसरतें वह हैं कि रोके से नहीं रुकतीं
बहुत अरमान ऐसे हैं कि दिल के दिल में रहते हैं।

खुदा रक्खे मुहब्बत ने किये आबाद दोनों घर
मैं उनके दिल में रहता हूँ, वह मेरे दिल में रहते हैं।

हमें दुश्वार जीना, आर[4] तुम को क़त्ल करने से
बड़ी मुश्किल में रखते हो, बड़ी मुश्किल में रहते हैं।

कोई नाम-ओ-निशाँ पूछे तो ऐ क़ासिद बता देना
तख़ल्लुस[5] 'दाग़' है और आशिक़ों के दिल में रहते हैं।

:o:

भवें तनती हैं, ख़ंजर हाथ में है, तन के बैठे हैं
किसी से आज बिगड़ी है कि वह यूँ बन के बैठे हैं।

दिलों पर सैकड़ों सिक्के तेरे जोबन[6] के बैठे हैं
कलेजों पर हज़ारों तीर इस चितवन के बैठे हैं।

इलाही[7] क्यों नहीं उठती क़यामत, माजरा क्या है
हमारे सामने पहेलू में वह दुश्मन[8] के बैठे हैं।

यह गुस्ताख़ी, यह छेड़ अच्छी नहीं है ऐ दिले नादाँ
अभी फिर रूठ जाएँगे, अभी वह मन के बैठे हैं।

असर है जज्बे[9]-उल्फ़त में तो खिंच कर आ ही जाएँगे
हमें परवा नहीं हम से अगर वह तन के बैठे हैं।

---

१. चालाक, मक्कार २. हसीन लोग ३. चन्द्रमुखी ४. इन्कार, परहेज़ ५. उपनाम ६. यौवन ७. हे भगवान् ८. रक़ीब ९. सच्चे प्रेम का प्रभाव।

बहुत रोया हूँ मैं जब से यह मैं ने ख़ाब देखा है
कि आप आँसू बहाए सामने दुश्मन के बैठे हैं।
यह उठना-बैठना महफ़िल में उनका रंग लाएगा
क़यामत बन के उट्ठेंगे भभूका[1] बन के बैठे हैं।
किसी की शामत आएगी, किसी की जान जाएगी,
किसी की ताक में वह बाम[2] पर बन-ठन के बैठे हैं।
क़सम देकर उन्हीं से पूछ लो तुम रंग-ढंग उसके
तुम्हारी बज़्म में कुछ दोस्त भी दुश्मन के बैठे हैं।
कोई छींटा पड़े तो 'दाग़' कलकत्ते चले जाएं
अज़ीमाबाद[3] में हम मुन्तज़िर सावन के बैठे हैं।

:o:

तमाम रात वह जागें, वह सोएं सारे दिन
ख़बर है क्या उन्हें क्योंकर कटे हमारे दिन।
ख़ुदा बचाए क़यामत के हैं तुम्हारे दिन
यह प्यारी-प्यारी जवानी, यह प्यारे-प्यारे दिन।
मुझे गुज़रती है एक-एक घड़ी क़यामत की
जो इस तरह से गुज़ारे तो क्या गुज़ारे दिन।
उन्होंने वादा किया आज शब[4] के आने का
ख़ुशी तो जब है ख़ुदा ख़ैर से गुज़ारे दिन।
किसी के आते ही घर में हुई वह तारीकी
चराग़ मैं ने जलाए हैं आज सारे दिन।
हमेशा तुम को मुबारक हो 'दाग़' रोज़े-निशात[5]
फिरें हमारे भी जैसे फिरे तुम्हारे दिन।

:o:

---

१. लाल, अंगारे की तरह २. कोठा ३. पटना
४. रात ५. ख़ुशी का दिन।

यह क्या कहा कि 'दाग़' को पहचानते नहीं
वह एक ही तो शख़्स है तुम जानते नहीं ?

वादा अभी किया था अभी खाई थी क़सम,
कहते हो फिर कि हम तुझे पहचानते नहीं ?

तन जाएँगे जो सामने आएगा आईना
देखें तो किस तरह वह भवें तानते नहीं ?

निकला है जो ज़बान से उसको निभाइए
ऐसी वह अपने दिल में कभी ठानते नहीं ।

क्या 'दाग़' ने कहा था जो ऐसे बिगड़ गए
आशिक़ की बात का तो बुरा मानते नहीं ।

:o:

परदे-परदे में इताब[1] अच्छे नहीं
ऐसे अन्दाज़े-हिजाब[2] अच्छे नहीं ।

मैकदे में हो गए चुपचाप क्यों
आज कुछ मस्ते शराब अच्छे नहीं ।

जब सवाले-वस्ल पर करता हूँ ज़िद
डर के देते हैं जवाब "अच्छे नहीं" ।

ऐ फ़लक[3] क्या है ज़माने की बिसात
दम-ब-दम के इन्क़लाब अच्छे नहीं ।

और सुनिये मुझको समझाते हैं वह
"ढंग यह ख़ानाख़राब अच्छे नहीं" ।

कोई बज़्मे-वाज़[4] से कहता गया
"ऐसे जलसे बे-शराब अच्छे नहीं" ।

एक नुजूमी 'दाग़' से कहता था आज
"आप के दिन ऐ जनाब अच्छे नहीं" ।

:o:

---

१. क्रोध २. छिपने के ढंग ३. आकाश ४. धार्मिक उपदेश के जलसे ।

निगाह फेर के उज़्र[1] विसाल करते हैं
मुझे वह उल्टी छुरी से हलाल[2] करते हैं।

ज़बान क़ता[3] करो दिल को क्यों जलाते हो
इसी से शिकवा इसी से सवाल करते हैं।

न देखी नब्ज़ न पूछा मिज़ाज भी तुमने
मरीज़े-ग़म की यूँ ही देख-भाल करते हैं?

पसे-फ़ना[4] भी मेरी रूह काँप जाती है
वह रोते-रोते जो आँखों को लाल करते हैं।

उधर तो कोई नहीं जिससे आप हैं मसरूफ़
इधर को देखिए हम अर्ज़े-हाल करते हैं।

हज़ार काम मज़े के हैं 'दाग़' उल्फ़त में
जो लोग कुछ नहीं करते कमाल करते हैं।

:०:

दिल गया, तुम ने लिया, हम क्या करें
जाने वाली चीज़ का ग़म क्या करें?

मारिका है आज हुस्न-ओ-इश्क़ का
देखिये वह क्या करें, हम क्या करें?

तुन्दख़ू[5] है कब सुने वह दिल की बात
और भी बरहम[6] को बरहम क्या करें।

आईना है और वह हैं देखिए
फ़ैसला दोनों यह बाहम[7] क्या करें।

कहते हैं अहले-सिफ़ारिश मुझसे 'दाग़'
तेरी क़िस्मत है बुरी, हम क्या करें।

:०:

---

१. इन्कार २. गला काटना ३. काट ४. मरने के बाद
५. अक्खड़ ६. ख़फ़ा ७. आपस में।

क्या कहूँ तुझको जो बेमेह्र[1]-ओ-फ़ुसूँगर[2] न कहूँ
जिसको दुनिया कहे उस बात को क्यों कर न कहूँ?

संगदिल[3] कहने से तो आप बुरा मान गए
यह जो कुछ सीने पे है उसको भी पत्थर न कहूँ?

मेहर्बानी से किसी शख़्स ने पूछा है मिज़ाज
सख़्त मुश्किल है कि हाले-दिले-मुज़तर[4] न कहूँ।

छेड़ कर हाले-अदू छेड़[5] से चुप हो जाऊँ
वह कहें 'फिर कहो' मैं उसको मुकर्रर[6] न कहूँ।

बात कहने का मज़ा क्या जो ग़लत तुम समझो
गर यक़ीं हो तो कहूँ, गर न हो बावर[7] न कहूँ?

दिल की ताकीद है हर हाल में हो पासे-[8] वफ़ा
क्या सितम है कि सितमगर[9] को सितमगर न कहूँ।

ग़ैर का हाल छिपाए से कोई छिपता है
किसी वजह से मैं आप के मुँह पर न कहूँ।

ग़ैर[10] के वास्ते दीदार[11] भी है दाद[12] भी है
किस तरह घर को तेरे अर्सा[13]-ए-महशर न कहूँ?

अब की कुछ मुँह से निकाला तो तुम्हीं जानोगे
'दाग़' फिर मुझको न कहना जो बराबर न कहूँ।

:o:

राह पर उन को लगा लाए तो हैं बातों में
और खुल जाएँगे दो-चार मुलाक़ातों में।

यह भी तुम जानते हो चन्द[14] मुलाक़ातों में
आज़माया है तुम्हें हम ने कई बातों में।

यारब[15] उस चाँद से मुखड़े को कहाँ से लाऊँ
रौशनी जिस की हो इन तारों भरी रातों में?

---

१. जिस के हृदय में प्रेम न हो २. जादूगर ३. कठोर ४. व्याकुल ५. शरारत ६. दोबारा, दोहराना ७. विश्वास ८. ख़्याल, आदर ९. अत्याचारी १०. प्रेम-प्रतिबंधी ११. दर्शन १२. न्याय १३. मैदान १४. कई, अनेक १५. हे भगवान्।

तुम्हीं इन्साफ़ से ऐ हज़रते नासेह[1] कह दो
लुत्फ़ उन बातों में आता है कि इन बातों में ?
क्या क़यामत है उस अर्मान भरे की हसरत
एक शब[2] जिस को मुयस्सर[3] न हो सौ रातों में।
ऐसी तक़रीर सुनी थी न कभी शोख़-ओ-शरीर
तेरी आँखों के भी फ़ितने हैं तेरी बातों में।
अह्दे[4] जमशेद[5] में था लुत्फ़े मै[6]-ओ-अब्र[7]ओ-हवा
कब यह माशूक़ थे उस वक्त की बर्सातों में।
हमने देखा उन्हीं लोगों को तेरा दम भरते
जिन की शोहरत थी यह हरग़िज नहीं इन बातों में।
दिल कुछ आगाह[8] तो हो शेवा[9]-ए-अईयारी[10] से
इस लिए आप हम आते हैं तेरी घातों में।
वस्ल कैसा वह किसी तरह बहलते ही न थे
शाम से सुब्ह हुई उन की मुदारातों[11] में।
वह गए दिन जो रहे याद बुतों को ऐ 'दाग़'
रात भर अब तो गुज़रती है मुनाजातों[12] में।

:०:

दर्दे-दिल का कोई पहलू[13] जो निकालूँ तो कहूँ
अपने रूठे हुए दिलबर[14] को मना लूँ तो कहूँ।
जह्ल से कम नहीं अहबाब[15] के ताने मुझको
जो हैं दिल में उन्हें दीवाना बना लूँ तो कहूँ।
पूछते क्या हो कि कैसा है किबाती चेहरा
पहले मैं हाथ में क़ुरआन उठा लूँ तो कहूँ[16]।

---

१. उपदेशक २. रात ३. मिलना, प्राप्त होना ४. काल ५. ईरान का एक प्रसिद्ध राजा ६. शराब ७. बादल ८. परिचित ९. तर्कीब १०. छल, मक्कारी ११. ख़ातिर, आव-भगत १२. ईश्वर-भक्ति १३. विषय १४. दिल लेने वाला १५. मित्रों १६. किसी बात पर विश्वास दिलाने के लिए हाथ में क़ुरआन लेकर मुसलमान बात करते हैं, जैसे हिन्दू हाथ में गंगाजली लेकर।

जो मेरे दिल में है कहते हुए जी डरता है
गुद्गुदा लूं तो कहूं, पांव दबा लूं तो कहूं।
शबे-हिज्राँ में जो कुछ उससे हुई हैं बातें
तेरी तस्वीर को सीने से लगा लूं तो कहूं।
यक-ब-यक[1] सुन के मेरा हाल उखड़ जाएँगे
हमनशीं[2] मैं उन्हें बातों में लगा लूं तो कहूं।
मैं हूँ बेताब, वह बद्मस्त, फ़साना है दराज़[3]
दिल को थामूं तो कहूं, उन को सम्भालूं तो कहूं।

:o:

किसी के ख़ौफ़ से जी खोलकर रोया नहीं जाता
कि जो आँसू टपकता है छिपा लेता हूं दामन में।
मुसख़्ख़र[4] कर लिया आख़िर को बंगाले के जादू ने
बड़ा बोल आगे आया तुम जो बोले थे लड़कपन में।
मज़ा अब है कि इस अंदाज़ से हों प्यार की बातें
हमारा हाथ सीने पर, तुम्हारा हाथ गरदन में।
नए गुल फूलते हैं, क्या निराले रंग खिलते हैं
बहारें जो तेरी महफ़िल में हैं वह कब हैं गुलशन में?
ग़ज़ब है 'दाग़' यह दिन-रात, यह बरसात यूं गुज़रे
कहाँ वह रश्के-गुल झूला झुलाएं जिस को सावन में!

:o:

साफ़ कब इम्तेहान लेते हैं
वह तो दम देके[5] जान लेते हैं।
तुम तग़ाफ़ुल[6] करो रक़ीबों से
जानने वाले जान लेते हैं।
"फिर न आना अगर कोई भेजे"
नामाबर[7] से ज़बान लेते हैं[8]।

---

१. एकाएकी २. साथी ३. लम्बा ४. जीत ५. जुल देना ६. बेपरवाई ७. दूत ८. वचन।

यह सुना है मेरे लिए तलवार
एक मेरे मेहरबान लेते हैं।
यह न कह हमसे "तेरे मुँह में ख़ाक"
इस में तेरी जबान लेते हैं।
कौन जाता है उस गली में जिसे
दूर से पासबान लेते हैं।
कर गुज़रते हैं हो बुरी कि भली
दिल में जो कुछ वह ठान लेते हैं।
वह झगड़ते हैं जब रक़ीबों से
बीच में मुझ को सान लेते हैं।
ज़िद हर-एक बात पर नहीं अच्छी
दोस्त को दोस्त मान लेते हैं।
'दाग़' भी है अजीब सेह्रबयाँ[१]
बात जिस से हो मान लेते हैं।

:o:

वही राह मिलती है चल-फिर के हम को
जहाँ ख़ाक में दिल मिलाए गये हैं।
गिले-शिकवे झूटे भी थे किस मज़े के
हम इल्ज़ाम दानिस्ता खाए गये हैं।
रहे चुप न हम भी दमे-अर्ज़े-मतलब
वह एक-एक के सौ-सौ सुनाए गये हैं।
फ़रिश्ते भी देखें तो खुल जाएँ आँखें
बशर को वह जलवे दिखाए गये हैं।
चलो हज़रते 'दाग़' की सैर देखें
वहाँ आज वह भी बुलाए गये हैं।

:o:

क्या माजेरा कहूँ दिले-उम्मीदवार का
एक आर्ज़ू हज़ार मुसीबत से कम नहीं।

---

१. जिस के बोल में जादू हो।

यह नाज़, यह निगाह, यह छलबल, यह शोख़ियाँ
तुम उससे भी सेवा हो क़यामत से कम नहीं।

:o:

इस फ़िक्र में कुछ उनसे न हम बात कर सके
यह गुफ़्तगू[1] न हो कहीं वह गुफ़्तगू न हो।
एक तेरी दोस्ती से हुई सब में दुश्मनी
गर यह न हो तो कोई किसी का अदू न हो।
क्या रश्क[2] है कि तालिबे[3]-हिजराँ हूँ इसलिए
जो मुझको है रक़ीब को वह आरज़ू न हो।
मिट्टी की मूरत इससे तो ऐ 'दाग़' ख़ूब है
माशूक़ क्या जो शोख़[4] न हो ख़ुशगुलू[5] न हो।

:o:

क्या लुत्फ़े इन्तिज़ार जो तू हीलाजू[6] न हो
किस काम का विसाल अगर आर्ज़ू[7] न हो।
महशर में और उनसे मेरे दू-ब-दू[8] न हो
कहने की बात है जो कोई गुफ़्तगू न हो।
ख़लवत[9] में तुझको चैन नहीं किस का ख़ौफ़ है
अन्देशा कुछ न हो तो नज़र चारसू[10] न हो।
वह आदमी कहाँ है वह इनसान है कहाँ
जो दोस्त का हो दोस्त, अदू[11] का अदू न हो।
ए 'दाग़' आके फिर गये वह, इसको क्या करें
पूरी जो नामुराद[12] तेरी आर्ज़ू न हो।

:o:

ज़ुल्फ़ वह दाम[13] कि जिस दाम से आज़ाद न हो
आँख वह चोर कि जिस चोर की फ़र्याद न हो।

१. बात-चीत २. लाग-डाट ३. इच्छुक ४. चंचल ५. सुरीली आवाज़ ६. बहानेबाज़ ७. अर्मान ८. सामने सवाल-जवाब ९. अकेले में १०. चारों ओर ११. बैरी १२. अभागी १३. जाल।

बात का ज़ख़्म है तलवार के ज़ख़्मों से सिवा[1]
कीजिये क़त्ल मगर मुँह से कुछ इर्शाद[2] न हो।

हाय वह दिल, वह कलेजा मैं कहाँ से लाऊँ
वस्ल में शाद[3] न हो हिज्र में नाशाद न हो।

बदगुमानी भी मोहब्बत में बुरी होती है
वह यक़ी हो मुझे जिस बात की बुनियाद[4] न हो।

मेरी शामत कि पढ़ा क़िस्सा-ए-शीरीं[5] मैंने
मुझसे वह कहते हैं "साहब तुम्हीं फ़र्हाद न हो।"

आदमी वह है जो चितवन का इशारा समझे
मुझको मालूम हुआ मुँह से कुछ इर्शाद न हो।

उठ सकें उस निगहे-नाज़ की चोटें किस से
रू-ब-रू तेरे जो आईना-ए-फ़ौलाद न हो।

कोसते हैं वह इलाही कि दोआ देते हैं
'दाग़' को देख के कहते हैं "वह नाशाद न हो'।

:o:

तुमको चाहा तो ख़ता[6] क्या है बता दो मुझको
दूसरा कोई तो अपना-सा दिखा दो मुझको।

कौन होता है बड़ी बात का सहने वाला
गालियाँ तुमको सिखा दीं यह दोआ दो मुझको।

ग़ैर को दस्ते-हिनाई[7] न दिखाओ, देखो
गर लगानी है यूँ ही आग लगा दो मुझको।

तुमको तो हश्र के दिन लाख में पहचान लिया
मैं भला कौन हूँ मेरा तो पता दो मुझको।

---

१. अधिक २. बात कहना ३. प्रसन्न ४. जड़ ५. शीरीं-फ़र्हाद का मशहूर क़िस्सा, जिसमें फ़र्हाद ने अपनी प्रेमिका शीरीं के लिए दूध की नहर पहाड़ काट कर बनाई थी और शीरीं की मृत्यु की झूठी खबर सुनकर आत्म-हत्या कर ली थी ६. अप्राप्य ७. मेंहदी लगा हाथ।

मुझको मिलता ही नहीं मेह्र-ओ-मोहब्बत का निशाँ
तुम ने देखा हो किसी में तो बता दो मुझको।
तुम भी राजी हो, तुम्हारी भी ख़ुशी है कि नहीं
जीते जी 'दाग़' यह कहता है मिटा दो मुझको।

:o:

पूछें वह जब ख़ुशी से क़यामत की बात है
मेरा ही हाल और मुझी से बयाँ न हो।
आफ़त की ताक-झाँक क़यामत की शोखियाँ
फिर चाहते हो हम से कोई बदगुमाँ न हो।
झूटा हुआ जो वादा तेरा उसका ग़म नहीं
डर है कि लब से ग़ैर के झूटी ज़बाँ न हो।
तक़दीर फेर लाई तेरे दर से रात को
धोका मुझे हुआ कि पराया मकाँ न हो।
ए 'दाग़' ऐश में हूँ दिले शाद-शाद से
इन्सान वह है जिस को ग़मे-दो जहाँ न हो।

:o:

हमारे दिल में बेखटके मोहब्बत अपनी रहने दो
अमानतदार का घर है अमानत अपनी रहने दो।
ग़ज़ब की बात है यह मशविरा देते हैं वह मुझको
रक़ीबों से भी तुम साहब-सलामत अपनी रहने दो।
किसी को चाह कर पछताओगे वह मुझसे कहते हैं
तुम अपने ही लिए झूटी मोहब्बत अपनी रहने दो।
डराया है, मनाया है, यह कह कर वस्ल में उनसे
बिगड़ जाएँगे हम बस-बस शिकायत अपनी रहने दो।
दुआएं माँगता हूँ मैं जनाबे किब्रियाई में
न छेड़ो, यह नहीं मौक़ा, शरारत अपनी रहने दो।

बज़ाहिर[1] मेहर्बानी है तो दिल में बद्गुमानी है
सलाम ऐसी इनायत[2] को, इनायत अपनी रहने दो।
वहाँ है बेनयाज़ी[3] 'दाग़' इससे क्या ग़रज़ उसको
यह ताअत[4] अपनी रख छोड़ो, इबादत अपनी रहने दो।

:o:

उन्हें यह जुस्तजू[5] है मरने वाला कोई पैदा हो
मगर बेहतर-से-बेहतर हो मगर अच्छे-से-अच्छा हो।
यह फ़र्माया उन्होंने देखकर तस्वीर यूसुफ़[6] की
इसे तो मोल वह ले जो कोई आँखों का अन्धा हो।
कलेजे से लगा लेता हूँ बर्गे-लाला-ओ[7]-गुल को
अजब क्या है अगर यह भी किसी के दिल का टुकड़ा हो।
अगर ग़ाफ़िल न होते हम तो कब के मर चुके होते
किसे यह याद कल क्या था, किसे मालूम कल क्या हो?
अभी नफ़रत है तुम को 'दाग़' से, वह दिन भी आते हैं
ख़ुदा चाहे तो उस कमबख़्त को दिल से तुम्हीं चाहो।

:o:

जब मुक़ाबिल ही न हों किसको बताऊँ अच्छा
सामने आप भी हों आप क़ी तस्वीर भी हो।
लड़ पड़े ग़ैर से क्या? ख़ैर है? कैसा है मिज़ाज?
तुम जो चुप-चुप भी हो, मुज़तर[8] भी हो, दिलगीर भी हो।
तुम नमक ख़ार हुए शाहे दकन के ऐ 'दाग़'
अब ख़ुदा चाहे तो मन्सब[9] भी हो जागीर भी हो।

:o:

---

१. ज़ाहिर में २. मेहर्बानी ३. जिसकी ज़रूरत न हो ४. इबादत, ख़ुदा से प्रार्थना ५. तलाश ६. एक पैग़म्बर (Prophet) गुज़रे हैं, जो बहुत ही ख़ूबसूरत थे ७. लाला और गुलाब के फूलों के पत्ते ८. परीशान ९. पदवी, ओहदा।

तुम आईना ही न हर बार देखते जाओ
मेरी तरफ़ भी तो सरकार देखते जाओ।
उठाओ आँख न शर्माओ यह तो महफ़िल है
ग़ज़ब से जानिबे-अग़ियार[1] देखते जाओ।
तुम्हें ग़रज़ जो करो रह्म पाएमालों[2] पर ?
तुम अपनी शोख़िए-रफ़्तार देखते जाओ।
क़सम भी खाई थी, क़ुर्आन भी उठाया था
फिर आज है वही इनकार देखते जाओ।
कोई-ना-कोई हर एक शेर[3] में है बात ज़रूर
जनाबे 'दाग़' के अशआर देखते जाओ।

:o:

हम इम्तेहान के साथ इम्तेहान देते हैं
वह जान लेने को आएँ तो जान देते हैं।
तकान पहुँचे न क़ातिल के दस्ते[4] नाज़ुक को
ठहर-ठहर के बहुत इम्तेहान देते हैं।
अदू[5] की बज़्म[6] है कुछ उनकी अंजुमन[7] तो नहीं
वह अपने हाथों से क्यों फूल-पान देते हैं।
यह नामाबर[8] ने कहा मुझसे क्या वह दिल में नहीं
कि आप और जगह का निशान देते हैं।
मेरे फ़साने को सुन-सुन के नींद उड़ती है
दुआएँ मुझको तेरे पास्बान[9] देते हैं।
तेरी निगाह ने तेरी अदा ने मारा है
दोहाइयाँ यही सब नौजवान देते हैं।
वह तुम कि रोज़ नई बदगुमानियाँ हैं तुम्हें
वह हम कि रोज़ नया इम्तेहान देते हैं।
सुना है बात भी करनी तुम्हें नहीं आती
तुम्हारे मुँह में हम अपनी ज़बान देते हैं।

---

१. ग़ैरों की तरफ़ २. पाँव से कुचले हुए ३. पद ४. हाथ ५. दुश्मन ६. महफ़िल, ७. महफ़िल ८. पत्र ले जाने वाला ९. द्वारपाल।

कहे जो 'दाग़' कि हम जाँनिसार[1] हैं, सब झूट
यह लोग मुफ़्त कहीं अपनी जान देते हैं ?

:o:

तेरी अदा पर फ़िदा[2] और कौन है, मैं हूँ
तबाह मेरे सिवा और कौन है, मैं हूँ।
दुआ जो मैं ने यह माँगी ख़ुदा बुरों से बचा
तो सुन के बोले बुरा और कौन है, मैं हूँ।
हिजाब[3] मुझसे, हया मुझसे, आर[4] है मुझसे
इस अंजुमन में नया और कौन है, मैं हूँ।

:o:

तू मुझ पे शेफ़्ता[5] हो मुझे इज्तिनाब[6] हो
यह इनक़लाब हो तो बड़ा इनक़लाब हो।
दुनिया में क्या धरा है, क़यामत में लुत्फ़ हो
मेरा जवाब हो न तुम्हारा जवाब हो।
निकले जिधर से वह, यही चर्चा हुआ किया
इस तरह का जमाल हो, ऐसा शबाब हो।
आशिक़ की एक हाल में गुज़रे तो लुत्फ़ क्या
दिल को कभी सुकून[6] कभी इज्तिराब[7] हो।
दरपर्दा[8] तुम जलाओ, जलाऊँ न मैं, चेख़ुश[9] ?
मेरा भी नाम 'दाग़' है गर तुम 'हिजाब' हो।

:o:

है ताक में दुज़्दीदा नज़र[10] देखिए क्या हो
फिर देख लिया उसने इधर देखिए क्या हो।
भेजा है ख़ते-शौक़ उसे, दिल ने न माना
अब फ़िक्र है यह आठ पहर देखिए क्या हो।
लड़ने तो लगीं उसकी निगाहों से निगाहें
इस जंग का अंजाम मगर देखिए क्या हो।

---

१. जान दे देना वाला २. निछावर होना ३. पर्दा ४. शर्माना ५. रीझा हुआ ६. आराम ७. दूर भागना ८. छिपे-चोरी ९. वाह क्या कहना १०. चोरी-चोरी देखना।

दिल जब से लगाया है कहीं जी नहीं लगता
किस तरह से होती है बसर देखिए क्या हो।
जो कहने की बातें हैं वह सब मैंने कही हैं
उनको मेरे कहने का असर देखिए क्या हो।
फिर यास मिटाती है मेरे दिल की तमन्ना
बन-बन के बिगड़ता है यह घर देखिए क्या हो।
ऐ 'दाग़' उन्हें भी तो है दुश्मन ही का धड़का
है दोनों तरफ़ एक ही डर देखिए क्या हो।

:o:

वादे से पेशतर[1] यह दोआ माँग लीजिए
यारब मेरी क़सम का उसे एतबार हो।
तुमको तो शोख़ियों से नहीं चैन रात-दिन
मैं जानता हूँ मेरे लिए बेक़रार हो।
ऐसे को तो ख़ुदा की क़सम छोड़ना है कुफ़्[2]
तुझसा हसीं हो और न दिल बेक़रार हो।
नासेह की गुफ़्तगू से हुईं बदगुमानियाँ
ऐसा न हो रक़ीब का दरपर्दा[3] यार हो।

:o:

कल तक तो आशना[4] थे मगर आज ग़ैर[5] हो
दो दिन में यह मिज़ाज है आगे को ख़ैर हो।
मर जायें दोनों कहर-ओ-ग़ज़ब[6] से तो ख़ैर[7] हो
तुम हो, तुम्हारा घर हो, न हम हों, न ग़ैर हो।
कैसा विसाल[8], किसकी तसल्ली, कहाँ का लुत्फ़
कुछ हो न हो बला से, मेरे दिल की ख़ैर हो।
दिल्ली में फूल वालों का मेला फिर आये 'दाग़'
बन-ठन के आये वह तो क़यामत की सैर हो।

:o:

---

१. पहले २. पाप ३. छिपा हुआ ४. मित्र ५. पराए ६. क्रोध ७. अच्छा ८. पिया मिलन।

आईना अपनी नज़र से जुदा[1] न होने दो
कोई दम और भी आपस में ज़रा होने दो।

कमनिगाही में इशारा है, इशारे में हया[2]
या न होने दो मुझे चैन से, या होने दो।

हाथ बाँधे हुए अग़यार[3] के साथ आओगे
हम दिखाएँगे मज़ा रोज़े-जज़ा[4] होने दो।

हम भी देखें तो कहाँ तक न तवज्जेह होगी
कोई दिन तज़किरा[5]-ए-अहले-वफ़ा[6] होने दो।

मेरी आँखों पर, मेरे मुँह पर न रक्खो तुम हाथ
हर्फ़े[7]-मतलब किसी सूरत से अदा[8] होने दो।

जब सुना 'दाग़' कोई दम में फ़ना[9] होता है
उस सितमगर ने इशारे से कहा, होने दो।

:o:

है ग़जब बोसा[10] मुझे खा के क़सम एक न दो
फिर तग़ाफ़ुल[11] से हज़ारों हों सितम एक न दो।

हाथ क्यों खींच लिया एक ही साग़र[12] देकर
दो तो दो सौ, जो न दो उससे तो कम एक न दो।

वह इशारों ही से एक़रार करें दो दिन का
ऐसे भोले नहीं समझेंगे जो हम एक न दो।

'दाग़' दिल्ली थी किसी वक़्त में या जन्नत थी
सैकड़ों घर थे वहाँ इश्क़े एरम[13] एक न दो।

:o:

कहते हैं जिसको हूर वह यक्साँ तुम्हीं तो हो
जाती है जिसपे जान मेरी जाँ तुम्हीं तो हो।

---

१. अलग २. लज्जा ३. ग़ैर का बहुवचन प्रेम-प्रतिबंधी ४. महशर, क़यामत ५. चर्चा ६. वफ़ादार लोग अर्थात् आशिक़ ७. बात ८. कहना ९. मिटना १०. चुम्मा ११. बेपर्वाही १२. प्याला १३. जिन पर बैकुंठ को भी ईर्ष्या हो।

मतलब की कह रहे हैं वह दाना[1] हमीं तो हैं
मतलब की पूछते हो वह नादाँ तुम्हीं तो हो।
आता है बादे-जुल्म तुम्हीं को तो वहम भी
अपने किये से दिल में पशीमाँ[2] तुम्हीं तो हो।
पछताओगे बहुत मेरे दिल को उजाड़ कर
इस घर में और कौन है मेहमाँ तुम्हीं तो हो।
एक रोज रंग लाएँगी यह मेहरबानियाँ
हम जानते थे जान के ख़ाहाँ[3] तुम्हीं तो हो।
दिल्दार-ओ[4]-दिलफ़रेब-ओ दिल[5] आजा[6]-ओ-दिल सिताँ[7]
लाखों में हम कहेंगे कि हाँ-हाँ तुम्हीं तो हो।
करते हो 'दाग़' दूर से बुतख़ाने को सलाम
अपनी तरह के एक मुसलमाँ तुम्हीं तो हो।

:o:

चलता है साथ एक मुसाफ़िर के दूसरा
ऐ काश आर्ज़ू[8] भी निकल जाए दम के साथ।
दोनों का नाम इश्क़ में मशहूर हो गया
मेरा वफ़ा के साथ तुम्हारा सितम[9] के साथ।
सीधी तरह कभी नहीं रहती तुम्हारी जुल्फ़
करती है बाँकपन यह बड़े पेच-ओ-ख़म[10] के साथ।
एक बार जान ली जो किसी की तो क्या मजा
कुछ-कुछ करम[11] भी कीजिए हर-हर सितम के साथ।

:o:

अच्छा बुरा जवाब मिले, जाए नामाबर
इन्कार ही सही मुझे लिक्खा तो कुछ-न-कुछ।

१. बुद्धिमान २. पछताना ३. जान लेवा ४. दिल रखने वाला ५. दिल मोह लेने वाला ६. तकलीफ़ पहुँचाने वाला ७. दिल छीनने वाला ८. इच्छा ९. जबर्दस्ती, अत्याचार १०. घुमाव-फिराव ११. मेहरबानी।

क्यों तीर वह लगाए जो ले दिल में चुटकियाँ
होती है उसकी बात में ईज़ा[1] तो कुछ-न-कुछ।
इशरत[2] न हो, क़लक़[3] हो यह क़िस्मत की बात है
फल आशिक़ी का 'दाग़' ने पाया तो कुछ-न-कुछ।

:o:

लेता है आदमी ही से तो आदमी सलाह
मेरी वही सलाह है जो आप की सलाह।
क़ायम मिज़ाज क्या हो तुम्हीं वह नहीं रहे
दिल की तरह बदलने लगी हर घड़ी सलाह।

:o:

इश्क़ जिसको न हो ऐसा नहीं इनसाँ कोई
आगे तक़दीर है खुश हो कि पशीमाँ कोई।
देर हो जाए बला से उन्हें आराइश में
रह न जाए किसी कम्बख्त का अर्मां कोई।
हसरतें यूँ तो मोहब्बत में बहुत होती हैं
दिल में रखने का निकल आता है अर्मां कोई।
एक मेहमान ने आते ही यह घर लूट लिया
वह जो दिल में है तो बाक़ी नहीं अर्मां कोई।
मिट चुकी है ख़लिशे[4]-दिल मगर अब भी ऐ 'दाग़'
फाँस की तरह खटक जाता है अर्मां कोई।

:o:

भोले ही बन के काम निकलता है गाह-गाह[5]
बन जाते हैं हम आप ही नादाँ कभी-कभी।
इक़रार से जियादा है इन्कार आप का
हर दम नहीं-नहीं है तो हाँ-हाँ कभी-कभी।
हर वक़्त उनकी शर्म से उठती नहीं पलक
होता है दिल के पार यह पैकाँ[6] कभी-कभी।

---

१ तकलीफ, दुःख २. आराम ३. दुःख ४. चुभन, खटक ५. जगह-जगह ६. तीर।

शुकरे-ख़ुदा की इश्क़ ने कुछ-कुछ असर किया
वह देखते हैं 'दाग़' का दीवाँ[1] कभी कभी।

:o:

सबा[2] अटखेलियाँ करती है क्या-क्या राह में उनसे
कभी काकुल[3] से आ लिपटी, कभी दामन से जा लिपटी।
घिरी हैं उनकी आँखें देखना क्या शर्मो-शोख़ी में
निगाहों से अदा लिपटी तो पलकों से हया लिपटी।
जलाने को मेरे बज़्म-ओ-चमन में रात-दिन देखो
जो लिपटा शमा से पर्वाना, बुलबुल गुल से जा लिपटी।
कोई देखे तो बाँकी वज़आ[4] रिन्दे[5]-लाओबाली की
कि उसके सिर से है वह लटपटी दस्तार[6] क्या लिपटी।
न रोके से रुका आख़िर गया 'दाग़' उसके कूचे में
न माना एक का कहना बहुत ख़ल्क़े-[7]ख़ुदा लिपटी।

:o:

वह सुबह को उठते ही मिला लेते हैं सूरत
आईना भी रहता है बराबर गुले तर भी।
इक़रार से पहले तो रहा करते थे पैग़ाम
जब वादा किया फिर नहीं देते वह ख़बर भी।
बैठो भी मेरे क़त्ल पे क्या बाँधोगे तलवार
देखूँ तो सही बाँधनी आती है कमर भी ?
ऐ 'दाग़' दमे नज़ा हैं वह मुन्तज़िर[8] इसके
क्यों देर लगा रक्खी है जल्दी कहीं मर भी।

:o:

उस तीर का ज़ख़्मी है मेरा दिल भी जिगर भी
अच्छों की बुरी होती है सीधी सी नज़र भी।

---

१. काव्य २. हवा ३. बाल ४. ढंग ५. शराब पीने वाला ६. पगड़ी ७. ख़ुदा की पैदा की हुई जनता ८. प्रतीक्षा करने वाला।

देखूँ[1] किसी महबूब को मैं सामने तेरे
मिन्नत से कहे तू 'निगहे लुत्फ़[1] इधर भी'।

बेताब तेरी बज़्म में देखा जिसे देखा
होश उड़ते हैं, मै[2] उड़ती है, उड़ती है ख़बर भी।

फ़र्माते हैं वह सुनते हैं जब 'दाग़' के अश्आर
अल्लाह ज़बाँ दे तो ज़बाँ में हो असर भी।

:o:

शक्ले यूसुफ़[3] की जो तारीफ़ सुनी, फ़र्माया
मुन्सिफ़ी शर्त है देखो इधर 'ऐसी तो न थी'।

बारहा आए - गए नामा-ओ-पैग़ाम-ओ-सलाम
मुझको जल्दी कभी ऐ नामाबर ऐसी तो न थी।

'दाग़' साहब की मोहब्बत न छुपाए से छुपी
ऐसी मशहूर हुई यह ख़बर ऐसी तो न थी।

:o:

पूरी अभी सुनी भी नहीं तुमने दास्ताँ
एक बात में बिगड़ गए यह बात क्या हुई।

जाते हैं बज़्मे-ग़ैर[4] में हम भी भरे हुए
दो - टूक उनसे या न हुई आज या हुई।

ऐ 'दाग़' किसको देख लिया तू ने ख़ैर है ?
अब तक तो होश में था, तुझे क्या बला हुई।

:o:

हर तरह दिल का ज़रर[5] जान का नुक़्सान देखा
न मोहब्बत तेरी अच्छी, न अदावत[6] अच्छी।

किस सफ़ाई से किया वस्ल का तूने इनकार
इस महल[7] पर तो ज़बाँ में तेरी लुक्नत[8] अच्छी।

---

१. मेहरबानी की निगाह २. शराब ३. एक ख़ूबसूरत पैग़म्बर थे ४. ग़ैर का महफ़िल ५. हानि ६. दुश्मनी ७. मौक़ा ८. हकलाना।

देखने वालों से अन्दाज कहीं छुपते हैं
हमको पर्दे से नजर आती है सूरत अच्छी।
मेरी शामत कि दिखाई उसे दुश्मन की शबीह[1]
मुसकरा कर यह कहा उसने, निहायत अच्छी।
जो हो आग़ाज[2] में बेहतर[3] वह खुशी है बदतर
जिसका अंजाम[4] हो अच्छा वह मुसीबत अच्छी।
ऐब भी इतने बयाँ करने लगे आख़िरकार
हो गई उनको बुरा कहने की आदत अच्छी।
ज़ोर-ओ-ज़र से भी कहीं 'दाग़' हसीं मिलते हैं
अपने नज़दीक तो है सबसे इताअत[5] अच्छी।

:o:

यह जो है हुक्म मेरे पास न आए कोई
इस लिए रूठ रहे हैं कि मनाए कोई।
यह न पूछो कि ग़मे-हिज्र में कैसी गुज़री
दिल दिखाने का अगर हो तो दिखाए कोई।
ताक में है निगहे-शौक़ खुदा ख़ैर करे
सामने से मेरे बचता हुआ जाए कोई।
हो चुका ऐश का जलसा तो मुझे ख़त पहुँचा
आपकी तरह से मेहमान बुलाए कोई।
तर्क-बेदाद की तुम दाद न चाहो मुझसे
करके एहसान न एहसान जताए कोई।
हाल अफ़्लाक[6]-ओ-ज़मीं का जो बताया है तो क्या
बात वह है जो तेरे दिल की बताए कोई।
वादा-ए-वस्ल उसे जान के खुश हो जाऊँ
वक़्ते रुख़्सत भी अगर हाथ मिलाए कोई।

---

१. चित्र २. आरम्भ ३. अच्छा ४. अन्त ५. आज्ञा-पालन ६. आकाश।

आपने 'दाग़' को मुँह भी न लगाया अफ़सोस
उसको रखता था कलेजे से लगाए कोई।

:o:

मिल गई बेख़ुदी-ए-शौक़[1] से राहत कैसी
हो गई दोनों जहाँ से मुझे फ़ुर्सत कैसी।
या कहूँ उनसे उठाई है अज़ीयत[2] कैसी
मरने वाले की रही रात को हालत कैसी।
दोस्त एक-रंग जो एकजा कभी मिल बैठते हैं
लुत्फ़ के साथ गुज़र जाती है सोहबत कैसी।
आप ही ज़ोर[3] करें, आप ही पूछें मुझसे
यह तो फ़र्माइए है आज तबीयत कैसी।
थे कहाँ रात को आईना तो लेकर देखो
और होती है ख़तावार की सूरत कैसी?

:o:

यह जाकर पूछ आ तू उनसे दरबाँ
कि वह ख़ानाख़राब आए न आए।
न देखो 'दाग़' का दीवाँ न देखो
समझ में यह किताब आए न आए।

:o:

मेरी फ़र्याद दूसरा न सुने
तुम सुनो ऐ बुतो, ख़ुदा न सुने।
राज़ अपना कभी कहा न कहे
हाल मेरा कभी सुना न सुने।
ख़ूबरू[4] वह जिसे ज़माना कहे
गुफ़्तगू वह जिसे ज़माना सुने।

---

१. प्रेम भक्ति में सुध-बुध का न रहना २. पीड़ा ३. सताना
४. सुन्दर

ग़ैर भी गर करे मेरी तारीफ़
तो भी हरगिज़ वह बेवफ़ा न सुने।

पहले गाली वहाँ है पीछे बात
अब सुने उसको कोई या न सुने।

दोस्ती क्या इसी को कहते हैं?
आशना[1] की जो आशना न सुने?

क्यों न बनता वह सूरते तस्वीर
मुद्दआ[2] था कि मुद्दआ न सुने।

होश उड़ते हैं देख कर उसको
ऐसे देखे परी लक़ा[3] न सुने।

हिज्र में जो दोआएँ माँगी हैं
कोई अल्लाह के सिवा न सुने।

'दाग़' को चैन ही नहीं आता
उससे जब तक बुरा-भला न सुने।

:o:

यह भी तरजे ख़िराम[4] होती है
सारी दुनिया तमाम होती है।

सुबह होने तो दो चले जाना
शब की नीयत हराम होती है।

हर्फ़े-मतलब कहा नहीं जाता
बात उनसे मुदाम[5] होती है।

यह सुना है कि बरहमन से भी
शेख़ की राम-राम होती है।

तेरा वादा है किस क़यामत का
रात-दिन सुबह-शाम होती है।

---

१. परिचित, दोस्त २. उद्देश्य ३. परी की तरह चेहरा रखनेवाला ४. चाल ५. सदा।

पहले ऐ 'दाग़' कुछ न होश आया
दिल की अब रोक - थाम होती है।

:o:

रंज की जब गुफ़्तगू होने लगी
आपसे तुम, तुम से तू होने लगी।
चाहिए पैग़ाम्बर दोनों तरफ़
लुत्फ़ क्या जब दू-ब-दू[1] होने लगी।
मेरी रुस्वाई की नौबत आ गई
उनकी शोहरत कू-ब-कू[2] होने लगी।
है तेरी तस्वीर कितनी बेहिजाब
हर किसी के रू-ब-रू होने लगी।
नाउमीदी बढ़ गई है इस क़दर
आर्ज़ू की आर्ज़ू होने लगी।
अबकी मिलकर देखिए क्या रंग हो
फिर हमारी जुस्तजू[3] होने लगी।
'दाग़' इतराए हुए फिरते हैं आज
शायद उनकी आबरू होने लगी।

:o:

फिर कहीं छुपती है जब ज़ाहिर मुहब्बत हो चुकी
हम भी रुस्वा हो चुके उनकी भी शोहरत हो चुकी।
देख कर आईना आपी - आप वह कहने लगे
शक्ल यह परियों की यह हूरों की, सूरत हो चुकी।
ग़ैर के आगे तो की होगी बुराई किस क़दर
मेरे मुँह पर बारहा मेरी शिकायत हो चुकी।
मर गए हम मर गए, इस ज़ुल्म की कुछ हद भी है ?
बेवफ़ाई हो चुकी ऐ बेमुरव्वत हो चुकी।

---

१. आमने-सामने २. गली-गली ३. तलाश।

क्या हमारा जुर्म ठहरा क्या सुना उज्रे-गुनाह;
वाए हसरत एक ही दिन में क़यामत हो चुकी।
क्यों हुए ग़मगीं न था कुछ मर्सिया[1] ज़िक्रे रक़ीब
आओ लग जाओ गले बस अब निदायत[2] हो चुकी।
हमसे दीवानों से कतरा कर चले नासेह न क्यों
जानता है वह कि ऐसों को नसीहत हो चुकी।
ऐ दिले मुश्ताक़[3] काफ़ी है सहारा इस क़दर
क्या न होगा वस्ल जब साहब-सलामत हो चुकी।
उसकी महफ़िल में रसाई भी हुई तो क्या हुआ
हम गए उस वक्त जब बर्ख़ास्त सोहबत[4] हो चुकी।
इस जमीं[5] में शेर कहने का मजा पाओगे 'दाग़'
अब तो जो होनी थी ऐ हजरत मलामत हो चुकी।

:o:

यह तेरी चश्मे फ़ुसूँगर[6] में कमाल अच्छा है
एक का हाल बुरा एक का हाल अच्छा है।
वह अयादत[7] को मेरी आते हैं लो और सुनो
आज ही ख़ूबी-ए-तक़दीर से हाल अच्छा है।
और तो क्या तेरी तस्वीर भी मुझसे यह कहे
वाक़ई मुझसे तेरा हुस्न-ओ-जमाल अच्छा है।
आपकी जिस में हो मर्जी वह मुसीबत बेहतर
आपकी जिस में ख़ुशी हो वह मलाल अच्छा है।
जो निगाहों में अच्छा हो वह जवाब औला[8] है
जो इशारों में हो पूरा वह सवाल अच्छा है।

---

१. काव्य का वह रूप जिसमें किसी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया जाए २. पछतावा ३. उत्सुक ४. जलसा समाप्त ५. मिसरा-ए-तरह (छन्द) ६. जादू भरी आँखें ७. बीमार को देखने आना ८. उच्चतर।

यह भी कहते हो कि बेचैन किया किसने मुझे
यह भी कहते हो मेरा हुस्न-ओ-जमाल अच्छा है।
देखनेवालों की हालत नहीं देखी जाती
जो न देखे वही मुश्ताक़े-जमाल अच्छा है।
अरसा-ए-हश्र में सब हो गए ख़ाहाँ[1] उसके
लोग कहते हैं इशारों से यह माल अच्छा है।
हमसे पूछे कोई दुनिया में है क्या शै[2] अच्छी
रंज अच्छा है, ग़म अच्छा है, मलाल अच्छा है।
आप पछताएँ नहीं, जोर से तौबा न करें
आप घबराएँ नहीं, 'दाग़' का हाल अच्छा है।

:o:

यूँ चलिये राहे शौक़ में जैसे हवा चले
हम बैठ-बैठ कर जो चले भी तो क्या चले।
बैठे उदास, उट्ठे परीशाँ, ख़फ़ा चले
पूछे तो कोई आपसे 'क्या आए, क्या चले'?
हम साथ हो लिए तो कहा उसने ग़ैर से
आता है कौन इससे कहो यह जुदा[3] चले।
बालीं[4] से मेरे आज वह यह कहके उठ गए
इस पर दवा चले न किसी की दुआ चले।
अफ़साना-ए-रक़ीब भी लो बेअसर हुआ
बिगड़े जो सच कहे से, वहाँ झूठ क्या चले।

:o:

'दाग़' उस बज़्म[5] में मेहमान कहाँ जाता है
तेरा अल्लाह निगहबान[6] कहाँ जाता है?

---

१. चाहने वाला २. चीज़ ३. अलग ४. सिरहाने ५. सभा ६. रक्षक।

ग़ैर का शिकवा भी होता है तो किस लुत्फ़[1] के साथ
उनसे तारीफ़ का उन्वान[2] कहाँ जाता है ?
वह भी दिन याद है यह कह के मनाते थे मुझे
आ इधर मैं तेरे क़ुर्बान कहाँ जाता है ?
ग़ैर जाता था वहाँ मैंने यह कह कर रोका
तुझसे कुछ जान-न-पहचान कहाँ जाता है ?
बन्द करते हो जो हाथों से तुम आँखें मेरी
क्या कहूँ मैं कि मेरा ध्यान कहाँ जाता है ?
आर्ज़ू वस्ल[3] की होती है सिवा[4] बादे-विसाल[5]
जान जाती है यह अर्मान कहाँ जाता है ?
'दाग़' तुमने तो बड़ी धूम से की तैयारी
आज यह ईद का सामान कहाँ जाता है ?

:o:

कुछ वह सरगर्मे-सुख़न[6] नामे ख़ुदा[7] होने लगे
अब ख़ुदा चाहे तो मतलब भी अदा होने लगे।
ग़ैर के मज़्कूर[8] पे मेरा बिगड़ना था बजा[9]
ठहरो-ठहरो सँभलो-सँभलो क्या-से-क्या होने लगे।
मैं ही चूका, मैं ने ज़ाहिर कर दिया इज़हारे-इश्क़
उस रविश से सैकड़ों उन पर फ़िदा[10] होने लगे।

:o:

हूरों की आर्ज़ू में है यह कैफ़ियत कहाँ
अल्लाह रक्खे उसकी तमन्ना ही और है।

---

१. मेहरबानी, प्रेम २. आशा ३. मुलाक़ात ४. ज्यादा ५. मुलाक़ात ६. बातें करना, बोलना ७. मुहावरा—ख़ैर से ८. वर्णन ९. ठीक १०. जान निछावर करना, अर्थात् प्रेम करना।

कैसा नयाज़, किसकी वफ़ा, किसकी आशिक़ी
तुम जानते नहीं मुझे दावा ही और है।
अजमेर हो के जाएँगे ऐ 'दाग़' हम बिहार
अब की बरस सफ़र का इरादा ही और है।

:o:

मुरादें[1] मान रहा हूँ क़ज़ा के आने की
बुरी घड़ी थी दिले-मुब्तला[2] के आने की।
शबे-विसाल न ठहरी हया के आने की
कि फिर कभी नहीं यह रात जाके आने की।
तुम्हारे दिन हैं क़यामत उठाए फिरने के
तुम्हारी उम्र है नाज़-ओ-अदा के आने की।
दमे-अख़ीर[3] मुझे इसकी क्या ख़ुशी कम है
कि देखी चाल तेरी मुस्करा के आने की।
वह मेरी क़ब्र पर आते हैं ख़ूब बन-ठन कर
यही तो वज्ह है ख़ल्क़े-ख़ुदा[4] के आने की।
जवाबे-वस्ल से क्योंकर न हूँ मैं शादीमर्ग[5]
ख़ुशी भी और ख़ुशी दिलरुबा के आने की।
वह सादा दिल हूँ कि ता वक़्ते वापसीं मुझको
जमी हुई है बुते-बेवफ़ा के आने की।
मेरा ख़याल तो आने दिया न तुमने मगर
हुई न रोक दिले-मुब्तला के आने की।
अभी तो खेल हैं ऐ 'दाग़' शोख़ियाँ उनकी
फिर आर्ज़ूएँ करोगे हया के आने की।

:o:

---

१. मनोती २. दुखी ३. मृत्यु समय ४. जनता ५. मृत्यु-समय।